ISSN : 2454-2121

सदीनामा

सोच में इज़ाफे की पत्रिका

वर्ष-18 ❐ अंक-2 ❐ 1 से 31 दिसम्बर, 2017 ❐ पृष्ठ-16+4 ❐ R.N.I. No. WBHIN/2000/1974 ❐ मूल्य-5.00 रुपए

तीन बरसेर फिरे देखा

इस 26 मई को मोदी सरकार के तीन वर्ष पूरे हो गए। इस अवसर पर विभिन्न शहरों में 'मोदी फैस्ट' के अन्तर्गत धूमधाम से बड़-बड़े समारोह आयोजित किए गए। इन समारोहों से यह संदेश देने का प्रयास किया गया कि मोदी सरकार के कार्यकाल में देश समृद्धि की राह पर तेजी से अग्रसर हुआ है और कई उल्लेखनीय सफलताएं हासिल हुई हैं। मोदी को उनके प्रशंसक 'गरीबों का मसीहा' बताते हैं। कई टीवी चैनलों और टिप्पणीकारों ने उनकी शान में कसीदे काढ़ने में कोई कसर नहीं रखी है।

असल में पिछले तीन सालों में क्या हुआ है?

एक चीज़ जो बहुत स्पष्ट है, वह यह है कि मोदी सरकार में सत्ता का प्रधानमंत्री के हाथों में केन्द्रीकरण हुआ है। मोदी के सामने वरिष्ठ से वरिष्ठ मंत्री की भी कुछ कहने तक की हिम्मत नहीं होती और ऐसा लगता है कि कैबिनेट की बजाए इस देश पर केवल एक व्यक्ति शासन कर रहा है। यह तो सभी को स्वीकार करना होगा कि यह सरकार अपनी छवि का निर्माण करने में बहुत माहिर है। नोटबंदी जैसे देश को बर्बाद कर देने वाले कदम को भी सरकार ने ऐसे प्रस्तुत किया मानों उससे देश का बहुत भला हुआ हो। जहाँ लोगों का एक बड़ा हिस्सा सरकार द्वारा बिछाए गए विकास के दावों के मायाजाल में फंसा हुआ है। वहीं जमीनी स्तर पर हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं। न तो महंगाई कम हुई है,न रोजगार बढ़ा और ना ही आम आदमी की स्थिति में कोई सुधार आया है। स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में गिरावट आई है और किसानों की आत्महत्या की घटनाएँ बढ़ी हैं। तमिलनाडु के किसानों द्वारा दिल्ली में किए गए जबरदस्त विरोध प्रदर्शन को सरकार के पिछलग्गू मीडिया ने अपेक्षित महत्व नहीं दिया यही हाल के अन्य हिस्सों में हुए विरोध प्रदर्शनों का भी हुआ।

विदेशों में जमा काला धन वापस लाकर हर भारतीय के बैंक खाते में 15 लाख रुपये जमा करने का भाजपा का वायदा सरकार के साथ-साथ जनता भी भूल चली है। पहले राम मन्दिर के मुद्दे का इस्तेमाल समाज को धार्मिक आधार पर ध्रुवीकृत करने के लिए किया गया और अब पवित्र गाय को राजनीति की विसात का मोहरा बना दिया गया है। गाय के नाम पर कई लोगों की पीट-पीटकर हत्या की जा चुकी है और मुसलमानों के एक बड़े तबके की आर्थिक रीढ़ तोड़ दी गई है। सरकार जिस तरह से गोरक्षा के मामले में आक्रमक रूख अपना रही है, उसके चलते, गोरक्षक गुण्डों की हिम्मत बढ़ गई है और वे खुलेआम मवेशियों के व्यापारियों और अन्यों के साथ गुंडागर्दी कर रहे हैं। सरकारी तंत्र, अपराधियों को सज़ा दिलवाने की बजाय पीड़ितों को ही परेशान कर रहा है।

सामाजिक स्तर पर पहचान के मुद्दे छाए हुए हैं। पिछली यूपीए सरकार भी अपनी सफलताओं का बखान करती थी परन्तु कम से कम यह बखान लोगों के भोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार संबंधी अधिकारों पर केन्द्रित था। अब तो चारों ओर झूठी वाहवाही और बड़ी-बड़ी डींग हांकने का माहौल है। पाकिस्तान के मुद्दे पर सरकार जब चाहे तब आंखें तरेरती रहती है। सीमा पर रोज भारतीय सैनिक मारे जा रहे हैं परन्तु आत्ममुग्ध सरकार, सर्जिकल स्ट्राइक का ढिंढोरा पीट रही है। कश्मीर के संबंध में सरकार की नीति का नतीजा यह हुआ है कि लड़कों के अलावा अब लड़कियां भी सड़कों पर निकलकर पत्थर फेंक रही हैं। कश्मीर के लोगों की वास्तविक समस्याओं की ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा है। उनसे संवाद स्थापित करने में सरकार की विफलता के कारण घाटी में हालात खराब होते जा रहे हैं।

हिन्दुत्ववादी देश पर छा गए हैं। शिक्षा के क्षेत्र का लगभग

शेष पृष्ठ 18 पर

इस परीक्षा वर्ष से आयेगा 11वीं-12वीं में हिन्दी में प्रश्नपत्र

अगर अपनी याददाश्त पर जोर डालूं तो कई घटनायें, लोग और कार्यक्रम याद आ रहे हैं। अजय विद्यार्थी कोलकाता के प्रभात खबर दैनिक में हैं और प्रदीप सुमन इसी अखबार के आसनसोल क्षेत्र के प्रभारी। दोनों इन आन्दोलनों के अन्तिम और निर्णायक संघर्ष के गवाह हैं। 29 नवम्बर की सुबह अखबार पर नजर गयी तो पता चला कि मुख्यमंत्री सुश्री ममता बनर्जी की सरकार ने राज्य के हिन्दी भाषियों को तोहफा दिया है। माध्यमिक में पहले प्रश्नपत्र अंग्रेजी में आता था जो कुछ वर्ष पहले से हिन्दी में आने लगा है, अब 11वीं और 12वीं कक्षा में प्रश्नपत्र अब हिन्दी में आयेगा। इससे करीब 85 हाजर छात्रों को फायदा मिलेगा। हिन्दी में प्रश्नपत्र होने से उनको प्रश्नों को समझने में सहूलियत होगी, बशर्ते अनुवाद ठीक हो। या प्रश्नपत्र हिन्दी माध्यम के शिक्षक बनाएं। राज्य के शिक्षा मंत्री ने यह जानकारी दी। सूत्रों के अनुसार शिक्षा विभाग के संयुक्त सचिव ने प०बं०उ०मा०शि० परिषद् की अध्यक्षा महुआ दास को 29 जून को पत्र संदर्भ 528/एसई/एस/10एम–65/2017 के माध्यम से यह आदेश दिया है। असल में यह एक लम्बी लड़ाई का परिणाम है पर बीच में लड़ाई छोड़कर दूसरे मुद्दों की तरफ भाग गये लपकउओ लोग आज मिठाई खाने या खिलाने दूर-दूर तक नजर नहीं आ रहे। हाँ, एक दिन मित्र सेराज खान बातिश का फोन याद आ रहा है कि भाई आसनसोल चलना है, मैं रावेल पुष्प और सेराज तीनों वहाँ पहुँचे वहाँ पूर्व सांसद आर.सी.सिंह, आसनसोल नगरनिगम के चेयरमैन जितेन्द्र तिवारी, संजय, मनोज यादव, अनिल पाण्डेय, प्रदीप सुमन आदि कई लोगों से मुलाकात हुई। यहाँ 'हिन्दी माध्यम शिक्षा विकास मंच का गठन हुआ। जिसकी कई सभाएं कोलकाता, नैहाटी आदि में आयोजित की गई। कोलकाता और नैहाटी में सेमिनार में सक्रिय भाग लेने वाले संजय जायसवाल, मणिप्रसाद सिंह, रवि साव, उदयराज सिंह, इन्दू सिंह, राजू पाण्डेय के नाम जबान पर आ रहे हैं, बाद में और नाम जरूर याद आयेंगे। यह आन्दोलन उत्तर बंगाल तक ले जाने में जिनका नाम है वे आज एक कॉलेज के प्रिंसिपल हैं। हाँ प्रो० दामोदर मित्र का नाम न लू तो सही में गलत होगा। कभी एसयूसीआई, वाममोर्चा के हाथों गुजरकर 2011 में सत्ता में आयी ममता बनर्जी ने 6 वर्ष बाद फैसला लिया। इसके लिए उनको बधाई और इस संघर्ष में लगे रहे ज्ञात और अज्ञात लोगों को भी बधाई। मंच का तर्क था कि स्नातक की परीक्षा प्रश्नपत्र हिन्दी में मिल रहे हैं तो 12वीं में समस्या कहाँ है? इस पूरे संघर्ष में केएमडीए के सीइओ डॉ० सौमित्र मोहन, एडीडीए के चेयरमैन तापस बनर्जी, राज्य के मंत्री मलय घटक एवं अन्त में फिर से ममतामयी मुख्यमंत्री माननीया ममता बनर्जी।

इन प्रश्नपत्रों को सही-सही छात्रों तक पहुँच के लिए प्रश्नपत्रों को सीधे हिन्दी भाषी शिक्षकों से बनवाना तथा अगर अनुवाद हो तो ठीक से। हिन्दी माध्यम से जुड़े सभी लोग बोर्ड को हर तरह की सहायता के लिए तैयार हैं।

जितेन्द्र जितांशु

संपादक मण्डल

उप-संपादक	:	तितिक्षा तथा पापिया भट्टाचार्य
संपादकीय सलाहकार:		यदुनाथ सेउटा
संपादक	:	जितेन्द्र जितांशु
विशेष सहयोग	:	आरती चक्रवर्ती, एच० विश्ववाणी तथा राजेन्द्र कुमार रुईया (अमेरिका) सभी अवैतनिक हैं।

प्रकाशन प्रभार

राजेश्वर राय • मीनाक्षी सांगानेरिया
मारिया शमीम

पत्राचार का पता :

सम्पादक - सदीनामा
48/49A, Swiss Park, Kolkata-700 033
West Bengal. India ☎ : 9231845289
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

एक और दिवस

भाइयो और बहनो!
शब्द मात्र नहीं
गूँज है हवाओं में
आओ मनाते हैं योग दिवस!
भूल जाओ
उस बात पर, ध्यान मत दो
जहाँ एक किसान पेड़ से लटक रहा है
वो शायद मरा नहीं है
ध्यान कर रहा है।
भाइयो और बहनो!
आओ शुद्ध करें मन को
आँखों को मूँद लो दो उँगलियों से
आहिस्ता-आहिस्ता सांस लो
फसल बाढ़ में खराब हो गई
ये ध्यान में न आए
शांति और गहन शांति
योगमय वातावरण में
ज़ोर-ज़ोर से हंसों
हा हा हा हा हा हा हा....
एक बार और
हा हा हा हा हा....
योगाभ्यास पर बैठा एक पुरुष बताता है
कल एक किसान बाढ़ से
जान से अज़ीज खेत को बचाते-बचाते योग सीख गया
और बाढ़ का पानी फसल पर हावी हो गया।
यह सब देख
बेचारा किसान योगी दम तोड़ दिया
शायद सदमें से और हृदय गति रुकने से।
खैर, भाइयो और बहनो!
गहरी साँस लें और धीरे-धीरे छोड़ें
मन का विकार दूर करें
चंद मिनट का शोक करेंगे
हमारे किसान भाइयों के लिए
फिर योगाभ्यास में लौटेंगे
रंग-बिरंगी योग मैट का मोल ज्यादा है
और किसान योग मैट जैसा
उसे भूल जाओ
उस पर बैठ जाओ
और योग करो, भाइयो और बहनो!
एक बार फिर हँसेंगे
हा हा हा.....हा हा हा

–बसन्त कुमार चौधरी
एम०ए० (हिन्दी)
9831490172

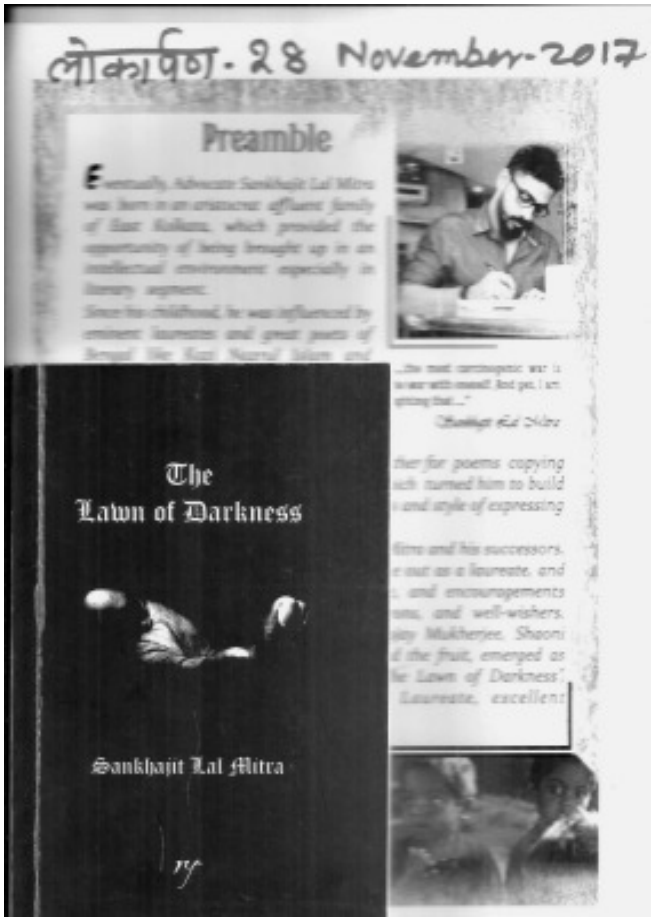

विज्ञान और साहित्य जगत के बीच आवाजाही

चेतना और सृजन के सरोकार जैसे सवालों पर विचार-विमर्श करते हुए कोलकाता की सुपरिचित संस्था साहित्यिकी ने भारतीय भाषा परिषद में 11 नवम्बर 2017 को एक राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया। परिसंवाद में भागीदारी करते हुए जहाँ एक ओर हिन्दी कविताओं में विषय की प्रासंगिकता को तलाशते हुए जहाँ डॉ० आयु सिंह ने हिन्दी कविता के विभिन्न समय अन्तरालों पर लिखी गई अनेक कवियों की कविताओं को उद्धृत करते हुए अपनी बात रखी वहीं पर ठेठ जमीनी स्तर पर काम करने वाले कार्यकर्ता सिद्धार्थ अग्रवाल ने जन समाज की भागीदारी की चिन्ताओं को सामने रखा। दूसरी ओर पर्यावरणविद् वैज्ञानिक एवं साहित्य की दुनिया के बीच अपने विषय के साथ आवाजाही करने वाले यादवेन्द्र ने अपने निजी अनुभवों को अनुभूतियों के हवाले से पर्यावरण के वैश्विक परिदृश्य पर टिप्पणी करते हुए न सिर्फ पर्यावरण को अपितु पूरे समाज को पूंजी की आक्रमकता से ध्वस्त करने वाली ताकतों की शिनाख्त करने का प्रयास किया।

कार्यक्रम के आरम्भ में 'साहित्यिकी' संस्था कोलकाता की सचिव गीता दूबे ने संस्था की गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण देते हुए अतिथियों का स्वागत किया। तत्पश्चात वाणी मुरारका ने मरुधर मृदुल की कविता 'पेड़, मैं और हम सब' का पाठ किया। साहित्य और पर्यावरण पर अपनी बात रखते हुए इंतु सिंह ने कहा कि प्रकृति प्रेम और हमारा स्वभाव और प्रकृति पूजा हमारी संस्कृति का हिस्सा रहा है।

बातचीत के सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए पर्यावरणविद् सिद्धार्थ अग्रवाल ने कहा कि पर्यावरण और स्थानीय भाषा दोनों के बीच असमान व्यवहार होता है। प्रकृति का अनियमित शोषण हो रहा है। नदियों का लगातार दोहन हुआ है। जागरूकता के अभाव में पानी बर्बाद होता है। आज के समय में हम विश्व स्तर पर जलवायु परिवर्तन देख रहे हैं। केन बेतवा परियोजना के कारण बहुत बड़ी संख्या में पेड़ डूबने वाले हैं। उन्होंने अपना दर्द साझा करते हुए कहा कि आज के समय में पर्यावरण के लिए काम करना बेहद चुनौतीपूर्ण है।

"पर्यावरण और सांस्कृतिक विरासतें" विषय पर दृश्य चित्रों के माध्यन से अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए यादवेन्द्र ने कहा कि जलवायु परिवर्तन की कीमत हमने ऋतुओं के असमान्य परिवर्तन के रूप में चुकायी है। गंगोत्री ग्लेशियर लगातार पीछे की ओर खिसकता जा रहा है। पाँच छः सालों के बाद केदारनाथ मंदिर में चढाया जानेवाला ब्रह्मकमल खिलना बंद हो जाएगा। जलवायु परिवर्तन के लक्षणों के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि अगर दुनिया ने अपने चाल और व्यवहार में परिवर्तन नहीं किया तो चीजें ऐसी बदल जाएंगी कि दोबारा उस ओर लौटना संभव नहीं हो पाएगा। राष्ट्रीय धरोहरों पर निरंतर बढ़ते जा रहे खतरों की चिन्ताएं भी उनके व्याख्यान का विषय रहीं।

किरण सिपानी ने कहा कि पर्यावरण में आ रहे बदलावों की वजह से हमारा अस्तित्व खतरे में है। कार्यक्रम का कुशल संचालन रेखा जाजोदिया और धन्यवाद ज्ञापन विद्या भंडारी ने किया।

काव्य वीणा सम्मान-षष्ठम् हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

कोलकाता की सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक चेतना जागरण केन्द्र 'परिवार मिलन' विगत सन् 2013 से प्रतिवर्ष हिन्दी काव्य कृति के लिए "काव्य-वीणा सम्मान" दे रही है। इस वर्ष षष्ठम् सम्मान हेतु इच्छुक रचनाकारों से वर्ष 2005 के बाद प्रकाशित अपनी छंद-बद्ध कृति की चार-चार प्रतियाँ एवं पासपोर्ट आकार के दो चित्र अपने संक्षिप्त परिचय के साथ परिवार मिलन कार्यालय (4, एस.एन. चटर्जी रोड, बेहाला, कोलकाता - 700 0038) में भेजने का आग्र किया जाता है।

कृति के भाव पक्ष एवं कला पक्ष अर्थात हृदयस्पर्शी विषय वस्तु, भावपूर्ण अभिव्यक्ति, लयात्मकता, सुललित छन्द योजना तथा भाषा सौष्ठव पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। सम्मान राशि 51000 रु० होगी तथा चयन समिति का निर्णय अन्तिम एवं मान्य होगा। कृति भेजने की अन्तिम तिथि दिनांक 28.02.2018 है। यह जानकारी संस्था के उपाध्यक्ष राजेन्द्र कानूनगों ने दी।

कहानी

उम्मीद

● अशोक गुप्ता

305, Himalaya Tower,Ahinsa Khand-2, Indirapuram ,Ghaziabad-201014,Mob. : 9871187875

घर बहुत छोटा तो नहीं था, लेकिन टीवी एक ही कमरे में था क्योंकि घर में एक ही टीवी था।

टीवी वाले कमरे में एक सोफे पर पिताजी हम दोनों भाई बहनों को लेकर बैठते थे। उसी कमरे में एक तख्तपोश पर बाबुल चाचा भी होते थे। मैं नौंवी क्लास में पहुँच गयी थी, वीरू अभी पांचवी में आया था। पिताजी हमें ज्यादातर ऐसे प्रोग्राम दिखाते थे जिसमें जानवरों, मछलियों और चिड़ियों पक्षियों के बारे में, जंगल, समुद्र और पहाड़ के बारे में सुन्दर सुन्दर तस्वीरे होतीं थीं और बहादुरी के कारनामें होते थे। बाबुल चाचा को भी यही सब देखना पसंद था।

वैसे, बाबुल चाचा की पसंद नापसंद का क्या जिक्र करना...वह बीमार थे। पिताजी उन्हें बीमार कहते थे और अम्मा कहती थीं कि वह बौरा गये हैं... कस्बा छोड़ कर शहर की हवा उन्हें माफिक नहीं आई, और पता नहीं कैसी बयार ने उनकी मति फेर दी... चाचा पढ़ाई में बहुत तेज थे। कस्बे के इंटर कॉलेज में उन्होंने सबसे ज्यादा नम्बर लिये थे और पिताजी ने उन्हें शहर में आगे पढ़ने भेज दिया था। बी.ए. में फिर उन्होंने फर्स्ट क्लास लिया। आगे उनका मन बना कि वह आई ए एस की तैयारी करें और इस बीच शहर में ही कहीं कोई नौकरी पकड़ लें। बात बन गयी। चाचा को एक डिग्री कॉलेज में लाइब्रेरियन का काम मिल गया। पिताजी कस्बे के एक डॉक्टर के पास कंपाउंडर थे लेकिन वह पढ़ाई लिखाई और ऊँची नौकरी का रुतबा जानते थे।

उसी साल अम्मा ने जोर देकर चाचा की शादी करा दी। चाचा की मर्जी तो नहीं थी, लेकिन अब तक तो सारा कुछ उनकी मर्जी से हो रहा था। वह मना करते भी तो कैसे... ? शादी हो गयी। चाचा शहर में ही नौकरी और कम्पटीशन की तैयारी में जुटे रहे। चाची वहीं कस्बे में ही रहती रहीं। शहर में अभी चाचा के पास कहाँ कोई ढंग का ठिकाना था जो वह परिवार रखते। वह महीना पन्द्रह दिन में आते और एकाध दिन रुक कर चले जाते। शुरू में वह दो तीन बार चाची को लेकर शहर भी गये। घुमाया फिराया, फिल्म सिनेमा दिखाया, और कुछ खरीददारी करा कर उन्हें वापस ले आये।

आगे किस्मत के धनी निकले चाचा, कि उन्हें कामयाबी मिली। पहली पोस्टिंग होते ही वह घर दौड़े आये। फल मिठाई और सारे घर के लिए कुछ न कुछ उनके पास था। और उस 'कुछ न कुछ' में यह अरमान था कि अब वनवास खत्म और वह चाची के साथ लेकर लौटें। लेकिन यहाँ तो उनके लिए भी 'कुछ न कुछ' धरा था....चाची उम्मीद से थीं, और सात महीने बाद चाचा बाप बनने वाले थे। खैर, खुशी के साथ, मायूसी का बोझ ले कर चाचा वापस लौट गये।

महीने भर बाद ही वह फिर आये। उनके पस हम सब को ले जाने के लिए रेल का टिकट था, कि सब लोग हफ्ता भर के लिए उनके पास शहर ही नहीं, उस महानगर चलें, जहाँ वह अफसर बन कर रह रहे हैं। हम सबके लिए स्लीपर क्लास का टिकट था और चाचा चाची के लिए फर्स्ट क्लास का। लेकिन फर्स्ट क्लास में चाची के साथ उन्होंने अम्मा को बैठाया और खुद हम बच्चों और पिताजी के साथ स्लीपर कोच में चले।

चाचा का घर बहुत बड़ा था। उनके कमरे में भी बहुत से जानवरों और चाँद की धरती की तस्वीरें सजी थीं। हफ्ता कैसे बीता हमें पता नहीं चला। यहीं हमने चाचा को, चाची के नाम से बुलाते सुना। हमें अब जाकर पता चला की चाची का नाम मालती है। अभी तक तो अम्मा उन्हें बबुनी ही कहकर बुलातीं थीं, बाबुल की बबुनी।

सच कहते हैं अम्मा के पंडित जी, 'समय बहुत तेज़ दौड़ता है। बीतते पता नहीं चलता।' सच कहतीं है हमारी कहारिन मौसी, बखत की मार का कोई भरोसा नहीं। अचानक कहर बनकर टूटता है, और अच्छा बुरा नहीं देखता...'

सच हुआ था सबका कहा। बखत चाची के सिर कहर बन कर टूटा और उन्हें साथ ले गया... पता नहीं बेटा था उनकी कोख में या बेटी। भसम तो उसको होना ही था अपनी माँ के साथ। चाचा ने सुना तो भागे आये थे। वैसे जचकी का टाइम तो अभी दूर था। अम्मा, कहारिन मौसी से तो यही बता रही थीं। पगलाहट ने पत्थर कर दिया था चाचा को। वह कभी अम्मा के सामने जा कर बैठते, तो कभी पिताजी के सामने, लेकिन कहते कुछ भी नहीं थे। हमसे मिलने से बचते रहते थे। जैसे-तैसे उन्होंने तेरह चौदह दिन काटे थे और फिर अपनी पगलाहट

की गठरी लेकर वापस चले गये थे।

फिर, चाची की बरसी के तीन महीने पहले वह फिर आये...नहीं, आये नहीं। लाये गये। उन्हें उनके ऑफिस के लोग पहुँचा कर गये। उनके पास उनका सारा सामान था, उनकी अब तक की डॉक्टरी रिपोर्टें थीं। चार-पाँच महीने से उनका दिमागी इलाज वहीं चल रहा था। डॉक्टर की राय थी कि यही दवाएं वह कम से कम साल भर नियम से खाएं और आराम करें। आराम के लिए नींद का इंजेक्शन बताया गया था। पिताजी तो खुद कम्पाउण्डर थे। सब समझ लिया था उन्होंने।

चाचा पता नहीं कैसे बावले थे ? न वह गणेशी की तरह दंगा और नंगई करते थे और न तोड़ फोड़.... बस, जब तब कुछ बोलने लगते थे। देर तक। बिना किसी को देखे। बस, अपने तख्तपोश पर बैठे, सामने रखे टीवी से नजर हटाकर, एक कोने को ताकते हुए, मानो वहाँ कोई खड़ा हो। अम्मा या पिताजी के दिये दवाई वह चुपचाप खा लेते थे। नहीं तो चुप्प लेटे छत ताकते रहते थे। हमारे सामने अब तक उनका यह हाल करीब सात महीने से था। चाचा की नौकरी एकदम छूटी नहीं थी, वह इलाज के लिए छुट्टी पर थे और उनकी तनख्वाह आती थी। हम आदी हो गये थे इन सबके, और इसी को सब ठीक ठाक चलना मानने लगे थे।

***

हम दोनों भाई बहन सोफे पर पिताजी के दायें बाएं बैठे टीवी पर जानवरों की दुनिया देख रहे थे। अम्मा रसोई में थी, चाचा भी अपने तख्तपोश पर बैठे टीवी देख रहे थे, अजीब दृश्य था। नदी के किनारे एक जिराफ गिर गया था। बताया जा रहा था कि जिराफ अपनी जिंदगी भर केवल खड़ा रहता है, और अगर गिर जाता है तो अपने कद और वजन के कारण उसका फिर उठ खड़ा होना असंभव होता है। शायद अमरीका से आया हुआ कोई पशु प्रेमी उस जिराफ को खड़ा करने की कोशिश कर रहा था। उसके साथ कुछ गाँव वाले भी जुट आये थे।

अचनानक चाचा बोलने लगे।

"अब यह जिराफ खुद खड़ा नहीं हो सकता, उसकी काया ही उसकी दुश्मन है। कुदरत का तमाशा है। एक तिलचट्टा भी ऐसा ही लाचार जीव है। वह अगर उलट जाय तो कितना भी हाथ पाँव मार ले, खुद सीधा नहीं हो सकता, उल्टे पड़े तिलचट्टे पर चींटियों का हमला होता है और वही उसकी मौत बन जाती है।

दूसरी तरफ तिलचट्टे के बारे में यह कहा जाता है कि कयामत तक सिर्फ तिलचट्टे बचे रहेंगे, लेकिन जब तिलचट्टा मरेगा तो ऐसी ही असहाय मौत मरेगा। उसके आसपास लोग ताली बजा बजा कर उसकी बेबसी देखते हैं, लेकिन शायद ही कोई से सीधा कर देता हो।"

टीवी पर ब्रेक हो गया, अम्मा एक गिलास में गुनगुना पानी ले आई।

"बाबुल की दवा का टाइम है।"

पिताजी दवआएं लेकर आये। चाचा ने चुप रह कर दवाएं ली। ब्रेक में सब तितर बितर हो लिये। ब्रेक अभी जारी ही था कि चाचा ने फिर बोलना शुरू कर दिया, हालांकि कमरे में कोई नहीं था।

" कोई नहीं खड़ा कर पायेगा जिराफ को ऐसे... न वह अमरीकी और न उस इलाके के लोकल लोग....यह इंसान के बस का नहीं है। उस इलाके में तो जिराफों की भरमार है...चार जिराफ मिल कर कोशिश करें तो एक गिरे हुए को मौत से बचा सकते हैं। उनकी लम्बी गर्दनों में और पैरों में ज़बरदस्त ताकत होती है...वह एक दूसरे की भाषा भी समझते हैं... लेकिन नहीं। यही तो ट्रेजिडी है।"

चाचा इतना कहकर चुप हो गए। इस बीच पिताजी कमरे में आ गये। हमको भी आना ही था।

"....और तिलचट्टे.... ? चाचा ने फिर बोलना शुरू कर दिया।

"एक उल्टे पड़े छटपटाते तिलचट्टे को अगर चींटियाँ खींच कर ले जा सकती है तो फिर चार तिलचट्टे आकर उसे सीधा क्यों नहीं कर सकते... ? वो कयामत के बाद भी जिंदा रहने वाले तिलचट्टे... ? और उनका एक साथी देखते देखते मौत के मुँह में चला जाता है।"

चाचा क्षण भर को फिर चुप हो गये।

"...लेकिन इस दुनिया में कौन किसको बचाता है ?" इस बार चाचा की आवाज रोआंसी हो आयी थी।

"....देखते देखते अपनी गोद में अपना और मेरा बच्चा लिए मर गयी मेरी मालती... सभी मजबूत टांगों वाले डॉक्टर कंपाउंडर नर्स देखते रहे...। कस्बा, शहर महानगर... अपने निजी डॉक्टर की जीप.... सब धरी रह गयी, उल्टे पड़े तिलचट्टे की तरह चली गयी मेरी मालती... नन्हीं चींटियाँ उसे खींच ले गयी।"

चाचा बिलखने लगे। वह मालती के लिए, अपने बच्चे के लिए विलाप करने लगे। न जाने क्या क्या हिन्दी अंग्रेजी में बोलने लगे, बेसिरपैर का और बेतुका। बीच बीच में उनके मुंह से नन्दिता का भी

नाम आता जा रहा था...।

"ऊँची गर्दन वाले कितने ही चेयरमैन, डायरेक्टर थे नंदिता के चारों ओर...उसके लिखे रिसर्च पेपर्स के दम पर दो बड़े डायरेक्टर प्रमोट हुए और विदेश पहुँच गये। उसी के नंदिता साथ यह साजिश भरा सलूक... उसे मजबूर कर दिया जाय कि वह अपनी इस्तीफा सरकाए और चलती बने। उसका जाना डिपार्टमेंट में एक गहरा सदमा बरसा गया। सबको पता था कि मिसेज नंदिता ने कोई गलत मुद्दे नहीं उठाये थे। वह अमेरिका से अपने विभाग का बारह साल का खास तजुर्बा लेकर भारत आईं थी। सचमु उन्हेंने अपने बाल धूप में सफेद नहीं किये थे। लेकिन उनकी रिपोर्ट से पहले कंपनी के आका लोगों के चेहरे सफेद हुए थे, फिर लाल और आखिर में कुटिलता से काले हो गये थे। मिसेज नंदिता की रिपोर्ट सारे विभाग के हित की बात कहती थी। सब उससे खुश थे, लेकिन जब अपने संघर्ष से हार कर वह जाने लगीं तो क्या रोका किसी ने मालती को? किसी ने हिम्मत कर के पूछा भी नहीं कि अब क्या करेगी मिसेज नंदिता? यह उमर तो नई नौकरी पकड़ पाने की भी नहीं है।"

नंदिता....मालती, मेरी औलाद, यह सब चतुर सयाने इंसानों के बीच वैसी ही मौत मरे, जैसी मौत उल्टा पड़ा तिलचट्टा मरता है, उन तिलचट्टों के होते हुए जो कयामत के बाद भी बचे रहते हैं।"

चाचा अब बोल कम, बिलख ज्यादा रहे थे। शोर सुनकर रसोई से अम्मा बाहर आई।

"दौरा पड़ा है।" कह कर अम्मा चाचा को नींद की सुई लगाने की तैयारी करने लगीं।

जरूरत को देखते हुए अम्मा ने सुई लगाने का यह काम सीख लिया है। उन्हें उम्मीद है कि एक दिन बाबुल यह सब दुनिया भर के बेमतलब गम भूल कर भले चंगे हो जाएंगे और काम पर लौटेंगे... और क्या, संसार में प्राणी का मरना जीना तो लगा ही रहता है।

सचमुच सयानी है अम्मा। उनकी उम्मीद जरूर फलेगी एक दिन।

रामलीला के माध्यम से प्रीति सम्मेलन

चित्रकूट से पधारे कलाकारों ने रामलीला का मंचन कर कलकत्ता कान्यकुब्ज सभा, कान्यकुब्ज सेवा ट्रस्ट एवं शाकुन्तल महिला कान्यकुब्ज समिति के संयुक्त तत्वावधान में दीपावली प्रीति मिलन समारोह में सपरिवार उपस्थित सदस्यों का मन मोह लिया। सत्संग भवन में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम-सीता विवाह एवं परशुराम संवाद की प्रस्तुति देखकर सभी भाव विभोर हो गये। कलाकारों मनोज तिवारी (श्रीराम), अंजलि दीक्षित (सीता मैया), सौरव तिवारी (लक्ष्मण), नरेन्द्र अग्निहोत्री (महर्षि व्यास), अक्षय द्विवेदी, राजा जनक, आशुतोष त्रिपाठी (ब्रह्मर्षि परशुराम), रामबाबू मिश्रा (महर्षि विश्वामित्र) एवं सह-कलाकार रामलखन, श्याम सुन्दर के अभिनय की सभी ने सराहना की। सांसद प्रसून बनर्जी, राज्य के मंत्री लक्ष्मी रतन शुक्ला, डॉ० प्रेमशंकर त्रिपाठी, दिनेश पाण्डेय, भोला प्रसाद सोनकर, राजेन्द्र द्विवेदी एरं अतिथियों का स्वागत कान्यकुब्ज सेवा ट्रस्ट के चेयरमैन पंडित लक्ष्मीकान्त तिवारी, कान्यकुब्ज सभा के अध्यक्ष दीपक मिश्रा, सचिव कुलदीप दीक्षित, शाकुन्तल महिला कान्यकुब्ज समिति की संरक्षक शकुन्तला तिवारी, अध्यक्ष प्रभा वाजपेयी, सचिव किरण तिवारी एवं कार्यकर्ताओं ने किया। समारोह में लकी कूपन ड्रा में प्रथम पुरस्कार शिवकिशोर मिश्रा, द्वितीय पुरस्कार अजय तिवारी, तृतीय पुरस्कार उमेश वाजपेयी को एवं अन्य पुरस्कार प्रदान किये गये। समाजसेवी रामलाल तिवारी, संयोजक उमेश वाजपेयी, शशिकान्त मिश्रा, अनिल पांडेय, रेखा वाजपेयी, शशि वाजपेयी, नीतू दीक्षित, दयाशंकर मिश्रा, सुनील अवस्थी, अशोक शुक्ला, वीरेन्द्र त्रिवेदी, मुकेश तिवारी, शिवकुमार अवस्थी, सुनील दीक्षित, हेमंत मिश्रा, अजय तिवारी, अरुण राजपेयी, अशोक तिवारी, संगम पांडेय, सुधीर मिश्रा, शशिभूषण मिश्रा, संतोष शुक्ला, विश्वनाथ त्रिवेदी, मुकेश शर्मा, अमित मिश्रा, राजीव मिश्रा, प्रेमा वाजपेयी, रेणु शुक्ला, अभय पाण्डेय एवं कार्यकर्ता सक्रिय रहे।

यह रपट मिनाक्षी सांगानेरिया ने बनायी।

विज्ञापन दरें :

पूरे देश के लिए एक समान

साईज		रु०
पूरा पेज	-	8000
आधा पेज	-	5000
एक चौथाई	-	3000

1 कॉ. × 1 से. मी. 250

नए कल का सवेरा

लेखक 'भारत एक नज़र' (कोलकाता से प्रकाशित दैनिक) के सम्पादकीय विभाग में – सं०

राजीव कुमार सिन्हा

एक दिन हम सुबह उठे और पता लगा कुछ बेलगाम पढ़े-लिखे हिन्दू कट्टरवादी युवकों ने धर्म को ना मानने पर मासूम बच्चों को गोलियों से भून डाला, तो आश्चर्य नहीं होगा, वैसे ही जैसे इस्लामिक कट्टरपंथियों ने कुछ साल पहले पाकिस्तान में किया था।

सारा विश्व आज आतंकवाद के खतरे से निजात पाने के लिए चिन्तन में लगा हुआ है और विडम्बना देखिए समूचे विश्व को शान्ति और अहिंसा का पाठ पढ़ाने वाले भारतवर्ष की नई पीढ़ी, वाट्सएप फेसबुक और सोसल मीडिया पर विषाणु संक्रामक रोग की तर फैलाये गए झूठे और आधारहीन इतिहास के भ्रमजाल में फंसकर हिंक रूख अख्तियार कर चुके हैं। मैं पहले ही यह बता दूँ कि मैं नई भाषा में कहे जाने वाला हिन्दू हूँ और मुझे गर्व है, अपनी जाती अपने धर्म पर हो सकता है। मैं मुसलमान होता तो भी गर्व करता क्योंकि पूर्ण विश्वास है मेरे काल्पनिक मुस्लिम माता पिता ने मुझे धर्म का वैसा ही ज्ञान और पाठ पढ़ाया होता जैसा हिन्दू होते हुए पढ़ा और सीखा हूँ, खासकर ईश्वर के दिखाए मार्ग पर चलना और विश्व शान्ति के लिए अपने धर्म के वैज्ञानिक तथ्यों को सुचारू रूप से अपने जीवनशैली और समाज में लागू करना। कोई भी हमें अपने तथ्यों और तर्क से प्रभावित जरूर कर सकता है, लेकिन मूलत: हमारी धारणाएं और सोच नहीं बदल सकता। सामूहिक तौर पर लगभग एक धारणा और सोच हमारे संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था पर निर्भर करती है, लेकिन युग का हमारा युवा वर्ग धार्मिक और सामाजिक ज्ञानोपार्जन के लिए निजी शोध ना करके वाट्सएपिया फेसबूकिया ज्ञान को सच और निर्णायक मान कर कुतर्की होते जा रहे हैं। इनके मुताबिक राजनेताओं के खानदान का नाजायज होना तो आम बात है, दूसरे धर्म के ईश्वरों के नाजायज होने का दावा यह संक्रमित युवा नस्ले पुख्ता मनगढंत सबूत के साथ करते हैं। सभी धर्मगुरु खासकर वो जो सही मायने में कहीं छिपे हुए शोध में लगे हैं और आज भी विश्व के धर्म के वैज्ञानिक स्वरूप को स्थापित करना चाहते हैं, उनके लिए खतरा सोशल मीडिया जिस पर संक्रमित विषाक्त विद्वान धर्म का ज्ञान बिना मांगे बांटते फिर रहे हैं.

मुस्लिम कट्टरवाद जो दुस्साहसी आतंकवाद का रुख अख्तियार कर चुका है और कई इस्लामिक देश इसकी आग में झुलस रहे हैं, क्या भविष्य में हिन्दू कट्टरवाद भी भारत को रैसे ही चपेटे में नहीं लेगा? नए शोसल मीडिया वाले धर्म गुरुओं का दोहरा चरित्र या पक्षपात देखिए हिन्दू दलितों पे बेरहमी से अत्याचार होता है जो इंसानियत के हमदर्द सवर्ण हिन्दू विरोध करते कहीं भी नजर नहीं आते और आईएसआईएस द्वारा बंगलादेश फ्रांस और काबुल में सैंकड़ों मासूम मारे जाते हैं जो इंसानियत के हमदर्द मुस्लिम भाई कहीं भी विरोध करते नजर अब तक नहीं आये उलट कश्मीर में मानवाधिकार हनन का मामला और भारतीय सैनिकों पर अत्याचार का इलज़ाम लगाते नजर आते हैं। इनके पास तस्वीरें भी अपने अपने कौम के दर्द वाली पहुँचती हैं। एक तरफ तो हम बच्चों के शिक्षित होने पर जोर दे रहे हैं, खासकर शिक्षा के लिए आबादी का बड़ा हिस्सा मध्यमवर्ग जो काफी मस्सक्कत से अपने परिवार का पालन पोषण और उच्च शिक्षा के लिए अपने बच्चों के साथ अपनी छोटी सी दुनिया में खुश रहने की सोचते हैं। दूसरी ओर बांग्लादेश आतंकवादी हमले में गुजरात के दलित प्रतारणा में उच्च वर्ग से शिक्षित बिगड़ैल बच्चों के शामिल होने की खौफनाक सच सामने आई।

हाल ही में गुजरात के ऊना शहर में दलितों खासकर हिन्दू चमारों को बेरहमी से गौ रक्षा समिति के कार्यकर्ताओं ने बर्बरता पूर्वक पिटाई की पता लगा युवक पढ़े लिखे धनिक परिवार के थे और बड़ी जाति के हिन्दू थे, लेकिन सोसल मीडिया पर निजी लाभ के लिए विरोध सिर्फ राजनीतिक पार्टियों द्वारा किया गया बंगलादेश में आतंकवादी हमला करने वाले सभी शिक्षित और रईस घरानों से

ताल्लुक रखते थे, यह कहना गलत नहीं होता कि ये संक्रमण ऊँची जाति पूँजीपतियों द्वारा प्रचारित और प्रसारित किया जाता है।

महात्मा गाँधी और विनोबा भावे ने कहा था कि मृत गायों के खाल को निकालना ही चाहिए, अन्यथा चमड़ा के लिए जीवित गायों की हत्या होने लगेगी, क्यूंकि ग्रामीण अर्थव्यवस्था चमड़े के उपयोग का महत्व प्राचीनतम हिन्दू संस्कृति का हिस्सा रही है और भारतवर्ष में प्रचलित है। बाबा साहब अम्बेडकर ने तो कहा था दलितों को यह काम छोड़ देना चाहिए। जाति व्यवस्था तोड़नी है, तो गांधीजी ने कहा था जो गाय को माता मानते हैं खासकर सवर्ण हिन्दू वो भी गौमाता की अंतिम संस्कार करें।

बचपन में दुरदर्शन पर भारत एक खोज नामक धारावाहिक में एक श्लोक सुनते थे सृष्टि निर्माता पूर्वज रक्षा कर, अगर सृष्णि निर्माता रचयिता स्वयं आज के परिवेश में भारत में चुनाव लड़ने आ जाएं तो उनसे उनकी जाति और धर्म पूछी जाएगी, क्यूंकि उनके ठेकेदारों ने पहले ही बता रखा है कि उनके मुख हृदय नाभि और पैर से कौन कौन सौभाग्यशाली और अभागों ने जन्म लिया है, फिर भी हो सकता है वह अपने निर्माता रचयिता होने पर इतराएं लेकिन अफसोस फिर भी उनको अपनी जाति तो बतानी ही पड़ेगी।

यदि पूर्व में हमारे सामाजिक व्यवस्था में खोट रही है तो आज शोषित होने पर हमें दोषारोपण करने के लिए शोषण करनेवाले के बजाय व्यवस्था को कमजोर करने वाला स्वार्थी स्वर्गवासियों का बहिष्कार और अपमान करना चाहिए।

वास्तव में हमें आज में जीना चाहिए, लेकिन यही भूल पूर्वज भी कर गए।

यह भी सही है कि राजनीतिक लाभ के लिए धार्मिक ध्रुवीकरण किया गया, नतीजा देश का बंटवारा।

आज भी वोट बैंक की राजनीति का घिनौना खेल देखिए कि बंगाल के नेता बीफ खाकर सोशल मीडिया पर डालते हैं और अन्य धर्म को मुँह चिढ़ाते हैं, देश में धार्मिक अस्थिरता फैलाने के लिए यह सभी कृत्य आग में घी का काम करते हैं।

फिर भी क्या गाँधी के धर्मनिरपेक्ष देश का सपना व्यर्थ था ?

क्यों ऐसा है कि आज के नवयुवक पहले से ज्यादा आक्रमक और हिंसक होते जा रहे हैं, जबकि कानून व्यवस्था पहले से ज्यादा पारदर्शी हुई है, आम झगड़े हिंसक रूप लेते जा रहे हैं, आतंकवाद का विरोध करने वाला धर्म खुद हथियार उठाने को व्याकुल है, फिर क्या किसी दिन यही कट्टर और हिंसक जानवर आज तो सोसल मीडिया पर जबानी जंग लड़ रहे हैं कल मासूमों और मजलूमों पर सरेआम गोलियाँ नहीं चलाएंगे ?

कॉलेजड के दिनों में मेरे साथ पूंजीपति रईस घरानों के लड़के जो महँगी गाड़ियों में आते थे मुझे याद हैं वो आपस में रेस लगाते थे कानून व्यवस्था को ताक पर रखकर और बीच में कोई गरीब या कमजोर आ जाये तो उसे ठोकने में जरा भी संकोच नहीं करते थे और ठोकने या चोट पहुँचाने के बाद उनके आत्म संतुष्टि का पैमाना मैं बयान नहीं कर सकता। इसका एक जीवंत उदाहरण हाल ही में कोलकाता के रेड रोड पर एक मुस्लिम रईसजादे की महंगी गाड़ी के नीचे परेड के दौरान कुचलकर नौजवान भारतीय सैनिक की अफसोसजनक मौत, जिसका विरोध करते मुस्लिम नौजवान बुद्धिजीवी सोशल मीडिया पर नदारत थे। पूंजीपति रईस विरासत में मिली हुई धन से धनवान, बनिया सेठों से रईसजादों का बस चले तो मुटिया मजदूर गरीब किसान और मेहनतकश अभागों पर खउलेआम गोलियां चलवां दें, ये मेरी निजी अनुभव है कट्टरता का ढोंग उच्च वर्ग में वायरस की तरह फैलता जा रहा है या यूँ कहें सम्पन्न परिवार या जाति के लोगों द्वारा।

अब यदि हिन्दुस्तान में भी कई ऐसे राज्य हैं जहाँ पाकिस्तानी झंडे फहराये जाते हैं, उसपर आपको मुस्लिम बुद्धिजीवी और सहनशील वर्ग विरोध करते नजर नहीं आएंगे। जब एक बिल्ली हमारे तोते को मार देती है, हम दु:खी होते हैं, किन्तु वही बिल्ली जब हमारे घरों में चूहों को मारती हैं हम खुश होते हैं। बिल्ली के द्वारा किया गया कृत्य दोनों ही स्थिति में हिंसा है, किन्तु हमारी प्रतिक्रिया ? एक के विरोध में और दूसरे के समर्थन में होता है। एक राष्ट्र पर कानून के ततकाल लागू करना मेरी समड़ में आधुनिक भारत के उज्ज्वल भविष्य की पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

नई पीढ़ी की सोसल मीडियाई नस्लों से तो यही गुजारिश है जात पात छोड़ो भारत को जोड़ो।

और इनके लिए एक शेर याद आता है–

बाअदब बानसीब

बेअदब बदननसीब।।

इश्क और अभिव्यक्ति की आजादी हमें संविधान ने दे रखा है बस मर्यादा और अदब की जरूरत है।

एक अभागन का किस्सा

छह हफ्ते के बच्चे को फीटस कहते हैं। एक नन्हें से दाने के बराबर होता है और उसका दिल बनना शुरू हो जाता है। ऐसा डॉक्टर बताती हैं। इसके साथ ये जरूरी जानकारी भी कि और इस बच्चे को जन्म नहीं दे सकती, बहुत ज्यादा प्रॉबबिलिटी है कि बच्चा ऐब्नॉर्मल पैदा हो। लड़की का मैथ कमजोर होता है। इसे प्रॉबबिलिटी जैसी बड़ी-बड़ी चीजें समझ नहीं आती। टकटकी बाँधे देखती है चुपचाप। उसे लगता है वो ठीक से समझ नहीं पायी है।

तब से उसे मैथ बहुत खराब लगता है। उसने कई साल प्रॉबबिलिटी पढ़ने और समझने की कोशिश की लेकिन उसे कभी समझ नहीं आया कि जहाँ कर्मों की बात आ जाती है वहाँ फिर मैथ कुछ कर नहीं सकता। 99 पर्सेंटिज होना कोई ज्यादा सुकून का बायस कैसे हो सकता है किसी के लिए। वो जानना चाहती है कि कोई ऐसा एल्गोरिदम होता है जो बता सके कि उसने डॉक्टरों की बात मान के सही किया था या नहीं। उसने जिन्दगी में किसी का दिल नहीं दुखाया कभी। जैसा बचपन के संस्कारों में बताया गया, सिखाया गया था वैसी जिंदगी जीती आयी थी। कुछ दिन पहले तो ऐसा था कि दुनिया उसके साथ बुरा करती थई तो तकलीफ होती थी, फिर उसने अपने पिता से इस बारे में बात की.... पिता ने उसे समझाया कि हमें अच्छा इसलिए नहीं करना चाहिए कि हम बदले में दुनिया से हमारे प्रति वैसा ही अच्छा होने की उम्मीद कर सकें। हम अच्छा इसलिए करते हैं कि हम अच्छे हैं, हमें अच्छा करने से खुशी मिलती है और हमारी अंतरात्मा हमें कचोटती नहीं। इसके ठीक बाद वो दुनिया से ऐसी कोई उम्मीद बाँधना छोड़ देती है।

अजन्मे बच्चे के चेहरे की रेखाएँ नहीं उभरी होंगी लेकिन उसने लड़की से औरत बनते हुए हर जगह उसे तलाशा है। दस साल तक की उम्र के बच्चों को हँसते खेलते देख कर उसे एक अजीब सी तकलीफ होती है। वो अक्सर सोचती है इतने सालों में अगर उसका अपना एक बच्चा हुआ होता तो क्या वो उसे कम याद करती ? या अपने मैथ नहीं जानने पर कम अफसोस करती ?

दुनिया के सारे सुखों में से सबसे सुन्दर सुख होता है किसी मासूम बच्चे के साथ वक्त बिताना। उससे बातें करना। उसकी कहानियाँ सुनना और उसे कहानियाँ सुनाना। पाँच साल पहले ऐसा नहीं था। उसे बच्चे अच्छे लगते थे। वो सबसे पसंदीदा भाभी, दीदी, मौसी हुआ करती थी। छोटे बच्चे उससे सट कर बैठ जाया करते गरमियों में। वो उनसे बहुत दुलार से बात करती। उसके पास अपनी सबसे छोटी ननद की राक्षस की कहानी के लिए वैसी ही उत्सुकता थी जैसे ससुर के बनाए हुए साइईंस के थीअरम्ज के लिए थी। बच्चे उसके इर्द-गिर्द हँसते खिलखिलाते रहते। उसका आँचल छू छू के देखते। उसकी दो चोटियाँ खीचना चाहते लेकिन वो उन्हें आँख दिखा देते और बदमाश वाली मुस्कान मुस्कियाते।

अपनी मर्जी और दूसरी जाति में शादी करने के कारण उसके मायके के ब्राह्मण समाज ने उसे बाहर कर दिया था। वो जब बहुत साल पहले लौट कर गयी तो लोग उसे खोद-खोद कर उसके पति के बारे में पूछते। बड़ी बूढ़ी औरतें उसके ससुर का नाम पूछती और अफसोस जतातीं। जिस घर ने उस बिन माँ की बेटी को दिल में बसा लिया था, उसके पाप क्षमा करते हुए, उस घर को एक ही नजर से देखतीं। औरतें। बच्चे। पुरुष। सब कोई ही। हर नया व्यक्ति उससे दो चीजें जानना चाहता। माँ के बारे में, कि जिसे जाए हुए साल दर साल बीतते जा रहे थे लेकिन जो इस लड़की की यादों में और दुखती हुयी बसी जा रही थी और ससुराल के बारे में।

औरत के जिन्दगी के दो छोर होते हैं। माँ और बच्चा। औरत की जिन्दगी में ये दोनों नहीं थे। वो सोचती अक्सर की अगर उसकी माँ जिन्दा होती या उसे एक बच्चा होता तो क्या वो दूसरे की तरह औरत होती ? एक तरह से उसने इन दोनों को बहुत पहले खो दिया था। खो देने के इस दु:ख को वो अजीब चीजों से भरती रहती। बिना ईश्वर के होना मुश्किल होता तो एक दिन वह पिता के कहने पर एक छोटे से कृष्ण को अपने घर ले आयी। ईश्वव के सामने दिया जलाती औरत सोचती उसे मन की बात तो पता ही है। याचक की तरह माँगने की क्या जरूरत है। वो पूजा करती हुई कृष्ण को देखकर मुस्कुराती। सच्चाई यही है जीवन की। हर महीने उम्मीद बाँधना और फिर उम्मीद का टूट जाना कई सालों से वो एक टूटी हुई उम्मीद हुई जा रही थी बस।

एक औरत कि जिसकी मान नहीं थी और जिसके बच्चे नहीं थे।

बहुत साल पीछे बचपन में जाती, अपने घर की औरतों को याद करती। दादी को। नानी को। जिन दिनों दादी घर पर रहा करती, दादी के आँचल के गेंठ में हमेशा खुदरा पैसा रहते। चवन्नी, अठन्नी, दस

पैसा। पाँच पैसा भी। घर पर जो भी बच्चे आते, दादी कई बार उनको घर से लौंटते वक्त अपने आँचल की गेठ खोल कर वो पैसा देना चाहती उनकी मुट्ठी में। गाँव के बच्चों को ऐसी दादियों की आदत होती होगी। शहर के बच्चे सकपका जाते। उन्हें समझ नहीं आता कि एक रुपए का वे क्या करेंगे। क्या कर सकते हैं। वो अपने बचपन में होती वो उन दिनों चाहती कि कभी खूब बड़ी होकर जब बहुत से पैसे कमाएगी तो दादी को अपने गँठरी में रखने के लिए पाँच सौ के नोट देगी। खूब सारे नोट लेकिन नोट अगर दादी ने साड़ी धोते समय नहीं निकाले तो खराब हो जाएँगे ना ? ये बड़ी मुश्किल थी। दादी थी भी ऐसी भुल्लकड़। अब इस उम्र में आदत बदलने की तो बोल नहीं सकती थी। दादी के जिन्दा रहते गाँव में उसका एक घर था। बिहार में जब लोग पूछा करते थे कि तुम्हारे घर कहाँ है तो उन दिनों वो गाँव का नाम बताया करती थी। अपभ्रंश करके। जैसे की दादी कहा करती थी। दनयालपुर।

उसे कहानियाँ लिखना अच्छा लगता था। किसी किरदार को पाल पोस कर बड़ा करना। उसके साथ जीना जिंदगी कहानियाँ लिखते हुए वो दो चोटी वाली लड़की हुआ करती थी। कॉलेज को भागती हुई लड़की कि जिसकी माँ उसे हमेशा कौर-कौर करके खाना खिला रही होती थी कि वो भुख्ले ना चली जाए कॉलेज। माँ जो हमेशा ध्यान देती थी कि आँख में काजल लगायी है कि नहीं घर से बाहर निकलने से पहले। कि दुनिया भर में सब उसकी सुन्दर बेटी को नजराने के लिए बैठा है। माँ उसके कहे वाक्य पूरे करती। लड़की अपने बनाए किरदारों के लिए अपनी मम्मी हुआ करती। आँख की कोर में काजल लगा के पन्नों पर उतारा करती। ये उसके जीवन का इकमात्र सुख था।

सुख, दु:ख का हरकारा होता है। औरत जानती। औरत हमेशा अपनी पहचान याद रखती। शादीशुदा औरत के प्यार पर सबका अधिकार बँटा हुआ होता। भरे पूरे घर में देवर, ननद, सास, देवरानी कई सारे बच्चे और कई बार तो गाँव की बड़ी बूढ़ी औरते भी होती जो उसके सिगरेट ला देने पर आशीर्वाद देते हुए सवाल पूछ लेती कि ई लाने से क्या होगा, ऊ लाओ ना जिसका हमलोग को जरूरत है।

ईश्वर के खेल निराले होते। औरत को बड़े दु:ख को सहने के लिए एक छोटा सुख लिख देता। एक बड़ा सा शहर बड़े दिल वाला शहर। शहर कि जिसके सीने में दुनिया भर की औरतों के दु:ख समा जाएँ लेकिन वो हँस सके फिर भी कोई ऐसी हँसी जिसका होना कुछ एक लम्हे भर ही होता हो।

शहर में कोई नहीं पहचानता लड़की को। हल्की ठंढ, हल्की गरमी के बीच होता शहर। लड़की जूड़ा खोलती और शहर का होना मीठा हुआ जाता। शहर उसकी पहचान बिसार देता। वो हुई जाती कोई खुल कर हँसने वाली लड़की कि जिसकी माँ जिंदा होती। कि जिसे बच्चे पैदा करने की फिक्र नहीं होती। कि जिसकी जिन्दगी में कहानियाँ, कविताएं, गीत और बातें होतीं। कि जिसके पास कोई फ्यूचर प्लान नहीं होता। ना कोई डर होता। उसे जीने से डर नहीं लगता। वो देखती एक शहर नई आँखों से। सपने जैसा शहर। कोई अजनबी सा लड़का होता साथ। जिसका होना सिर्फ दो दिन का सच होता। लड़की रंग भरे म्यूजीयम में जाती। लड़की मौने के प्रेम में होती। लड़की पौलक को देखती रहती अपलक। उसकी आँखों में मुखर हो जाते चुप पेंटिंग के कितने सारे तो रंग। सारे सारे रंग। लड़की देखती आसमान। लड़की पहचानती नीले और गुलाबी के शेड्स। शहर की सड़कों के नाम। ट्रेन स्टेशन पर खो जाती लेकिन घबराहट में पागल हो जानेके पहले उसे तलाश लेता वो लड़का कि जिसे शहर याद होता पूरा पूरा। लड़की ट्रेन में सुनाती किस्सा। मौने के प्रेम में होने को, कि जैसे भरे शहर में कोई नज़र खींचती है अपनी ओर, वैसहे ही मौने की पेंटिंग बुलाती है उसे। बिना जाने भी खिंचती है उधर। कुछ भी नहीं दुखता उन दिनों सब अच्छा होता। शहर। शहर के लोग। मौसम। कपड़े। सड़क पर मिलते काले दुपट्टे। पैरों की थकान। गर्म पानी। प्रसाद में सिर्फ कॉफी में डालने वाली चीनी फाँकते उसके कृष्ण भगवान।

शहर बसता जाता लड़की में और लड़की छूटती जाती शहर में। लौट आने के दिन लड़की एक थरथराहट होती। बहुत ठंढी रातों वाली। दादी के गुजर जाने के बाद ट्रेन से उसका परिवार गाँव जा रहा था। बहुत ठंढ के दिन थे और बारिश हो रही थी। खिड़की से घुसती ठंढ हड्डियों के बीच तक घुस जा रही थी। वही ठंड याद थी लड़की को। उसकी उँगलियों के पोर ठंढे पड़ते जाते। लड़की धीरे धीरे सपने से सच में लौट रही होती। कहती उससे, मेरे हाथ हमेशा गरम रहते थे। हमेशा। कितनी भी ठंढ में मेरे हाथ ठंढे नहीं पड़ते। लेकिन जब से माँ नहीं रही, पता नही कैसे तो मेरी हथेलियाँ एकदम ठंढी हो जाती है।

शहर को अलविदा कहना मुश्किल नहीं था। शहर वो सब कुछ हुआ था उसके लिए जो कि होना चाहिए था। लड़की लौटते हुए सुख में थी। जैसे हर कुछ जो चाहा था वो मिल गया हो। कोई दु:ख नहीं छू पा रहा था उसकी हँसती हुई आँखे। उसके खुले बालों से सुख की खुशबू आती थी। लौट आने के बाद शहर गुम होने लगा। लड़की

कितना भी शहर के रंग सहेज कर रखना चाहती, कुछ ना कुछ छूट जाता। मगर सबसे ज्यादा जो छूट रहा था वो कोई एक सपने सा लड़का था कि जिसे छू कर शिनाख्त करने की ख्वाहिश थी, कि वो सच में था। हम अपने अतीत को लेकिन छू नहीं सकते। आँखों में रीप्ले कर सकते हैं दुबारा।

सुख ने कहा था कि दु:ख आएगा। मगर इस तरह आसमान भर दु:ख आएगा, ये नहीं बताया था उसने। लड़की समझ नहीं पाती कि हर सुख आखिरकार दु:ख में कैसे मोर्फ कर जाता है। दु:ख निर्दयी होता। आँसुओं में उसे डुबो देता कि लड़की साँस साँस के लिए तड़पती। लड़की नहीं जानती कि उसे क्या चाहिए। लड़की उन डेढ़ दिनों को भी नहीं समझ पाती कि कैसे कोई भूल सकता है जीवन भर के दु:ख। अभाव। मृत्यु। कि वो कौन सी टूटन थी जिसकी दरारों में शहर सुनहले बारीक कणों की तरह भर गया है। जापानी फिलोस्फी– वाबी साबी। कि जिससे टूटन अपने होने के साथ भी खूबसूरत दिखे।

महीने भर बाद जब हॉस्पिटल की पहली ट्रिप लगी तो औरत के पागलपन, तन्हाई और चुप्पी ने पूरा हथियारबंद होकर सुख के उस लम्हें पर हमला किया। नाजुक सा सुख का लम्हा था। अकेला। टूट गया। लड़की की उँगलियों में चुभे सुख के टुकड़े आँखों को छिलने लगे कि जब उसने आँसू पोंछने चाहे।

उसने देखा कि शहर ने उसे बिसार दिया है। कि शहर की स्मृति बहुत शॉर्ट लिव्ड होती है। औरते अपने अकेलेपन और तन्हाई से लड़ती हुई भी याद करना चाहती सुख के किसी लम्हे को। लौट-लौट कर जाना और लम्हे को रिपीट में प्ले करना उसे पागल किए दे रहा था। कई किलोमीटर गाड़ी बहुत धीरे चलाती हुई औरत घर आयी और बिस्तर पर यूँ टूट के पड़ी की बहुत पुराना प्यार याद आ गया। मौत से पहली नजर का हुआ प्यार।

उसे उलझना नहीं चाहिए था लेकिन औरत बेतरह उलझ गयी थी। अतीत की गांठ खोल पाना नामुमकिन था। लम्हा लम्हा अलगा के शिनाख करना भी। सब कुछ इतने तीखेपन से याद था उसे। लेकिन उसे समझ कुछ नहीं आ रहा था। वो फिर से भूल गयी थी कि जिन्दगी उदार हो सकती है। ख्वाहिशे पूरी होती हैं। बेमकसद भटकना सुख है। एक मुकम्मल सफर के बाद अलविदा कहना भी सुख है।

हॉस्पिटल में बहुत से नवजात बच्चे थे। खबर सुनकर खुशी के आँसू होते परिवार थे। औरत खुद को नीले कफन में महसूस कर रही थी। उसे इंतजार तोड़ रहा था। दस साल से उसके अन्दर किसी अजन्मे बच्चे का प्रेम पलता रहा था। दु:ख की तरह। अफसोस की तरह। छुपा हुआ। कुछ ऐसा कि जिसकी उसे पहचान तक नहीं थी।

आखिरकार वो खोल पायी गुत्थी कि सब इतना उलझा हुआ क्यूँ था। कि एक शादीशुदा औरत के प्यार पर बहुत से लोगों का हिस्सा होता है। उसका खुद का पर्सनल कुछ भी नहीं होता। प्यार करने का, प्यार पाने का अधिकार होता है। कितने सारे रिश्तों में बँटी औरत। सबको बिना खुद को बचाए हुए, बिना कुछ माँगे हुए प्यार करती औरत के हिस्से सिर्फ सवाल ही तो आते हैं। 'खुशखबरी कब सुना रही हो ?' सिवा इस सवाल के उसके कोई जवाब मायने नहीं रखते। उसका होना मायने नहीं रखता। वो सिर्फ एक औरत हो जाती है। एक बिना किनारे की नदी।

बिना माँ की बच्ची। बिना बच्चे की माँ।

दादी जैसा जीवन उसने नहीं जिया था कि सुख से छलकी हुई किसी बच्चे की मुट्ठी पर अठन्नी धर सके लेकिन अपना पूरा जीवन खंगाल के उसने पाया कि एक प्यार है जो उसने अपने आँचर की गाँठ में बाँध रखा है। इस प्यार पर किसी का हिस्सा नहीं लिखाया है। किसी का हक नहीं।

वो सकुचाते हुए अपनी सूती साड़ी के आँचल से गाँठ खोलती है और तुम्हारी हथेली में वो प्यार रखती है तो इतने सालों से इसकी इकलौती थाती है।

वो तुम्हारे नाम अपने अजन्मे बच्चे के हिस्से का प्यार लिखती है।

भारत सरकार की ग्रामीण स्वास्थ्य सुविधाएँ

अपनी लाड़ली नन्दी सी बच्ची को गोद में उठाये सुनीता सांदरा अत्यन्त प्रसन्न नजर आ रही थी। केवल दो दिन पहले ही बीजापुर जिला अस्पताल में इस बालिका का जन्म हुआ था। इससे पहले दो बार सुनीता का गर्भ गिर चुका था।

क्योंकि गर्भावस्था में जटिलता के कारण उसे बीजापुर से 170 किलोमीटर दूर जगदलपुर अस्पताल में भेजा गया था। लेकिन तब चिकित्सीय कुशलता और उपकरणों की कमी के कारण ऐसे मामलों में इलाज की सुविधाएं नहीं थी। इसके परिणामस्वरूप कई बार अजन्मे शिशु या माता की मृत्यु हो जाती थी। 2015 तक जिला अस्पताल में बहुत ही कम कर्मचारी कार्य करते थे जिनमें तीन से चार डॉक्टर, 12 नर्सें और प्रमुख सर्जरी करने के लिए आपरेशन थियेटर में भी पर्याप्त उपकरण नहीं थे।

बुधीराम के चाचा के पैर की हड्डी टूटने पर जो परेशानी झेलनी पड़ी उसे याद करते हुए बुधीराम ने कहा, 'बीजापुर जिला अस्पताल से 30 किलोमीटर दूर मेरे गाँव से चाचा को अस्पताल लाने के लिए परिवहन का एक मात्र साधन बैलगाड़ी था। उस अस्पताल में उनका इलाज करने के पर्याप्त साधन नहीं थे और हमारे पास 3500रुपये में एक वाहन किराए पर लेकर उन्हें जगदलपुर के अस्पताल में ले जाने के सिवाए कोई चारा नहीं था।' सीमांत किसान बुधीराम को वाहन का किराया देने के लिए अपने एक रिश्तेदार से पैसे उधार लेने पड़े थे।

इस बार महीने की शुरूआत में जब वह अपनी बीमार माँ के इलाज के लिए यहाँ आया तो उसे अस्पताल में हुए परिवर्तन को देखकर विश्वास ही नहीं हुआ। आज अस्पताल में बड़े शहरों की तरह आधुनिक सुविधाएं हैं और इससे भी महत्वपूर्ण पर्याप्त संख्या में डॉक्टर और विशेषज्ञ तथा अन्य कर्मचारी के साथ ही बेहतरीन बुनियादी ढांचा है। अस्पताल के अन्य सुविधाओं के अतिरिक्त 50 बिस्तरों वाली नई माता और बच्चा देखभाल इकाई 'उमंग' तथा गंभीर नवजात बच्चों के इलाज के लिए विशेष नवजात देखभाल इकाई (एसएनसीयू) है।

सामान्य से अलग सोच, राजनीतिक इच्छा शक्ति राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन से कोष और नीतियों के रूप में सहायता तथा यूनीसेफ की मदद से यह संभव हुआ है। यूनीसेफ ने भारतीय सार्वजनिक स्वास्थ्य फाउंडेशन और इकेएएम के साथ साझेदारी के जरिए जिले में वंचित और सीमांत लोगों तक पहुँच के लिए विभिन्न नवीन कार्य नीतियों को कार्यान्वित करने में मदद की है। डॉक्टरों के लिए अस्पताल और आवासीय निर्माण सुविधाओं तथा स्वास्थ्य बुनियादी ढाँचा में सुधार के लिए अन्य संसाधनों के अतिरिक्त राष्ट्रीय खनिज विकास निधि का उपयोग भी किया गया।

स्वयं एमबीबीएस डिग्री प्राप्त बीजापुर जिला के जिलाधीश डॉक्टर अय्याज तम्बोली ने इस दूरस्थ जिले की ओर डॉक्टरों का ध्यान खींचने के लिए शोसल मीडिया का उपयोग किया और इसके काफी सकारात्मक परिणाम सामने आये। इस अपील पर शुरू में यहाँ आने वाले डॉक्टरों में से एक महाराष्ट्र में भंडारा जिले के डॉक्टर कुशल मधुकर साकुरे ने कहा कि पहली बार वे एक स्थान देखने के लिए आये और इसे देखते ही उन्होंने निर्णय ले लिया कि यही वह स्थान है जहाँ पर वे जो कार्य करना चाहते थे वह कार्य कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि प्रशासन ने बिना समय गवाएं उनकी व्यवसायिक जरूरतों को पूरा किया। उन्होंने कहा कि इसके अतिरिक्त उन्हें बेहतरीन वेतन और डॉक्टरों को आराम से रहने के लिए एयर कंडीशनर तथा अन्य घरेलू उपकरणों, भोजनशाला एवं पूरी तरह से सुसज्जित आवास उपलब्ध करवाया गया है। आज यहाँ 9 विशेषज्ञों सहित 20 से अधिक डॉक्टर और लगभग 50नर्सिंग स्टॉफ है।

बीजापुर जिले में गंगालूर गाँव के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में पदस्थ युवा डॉक्टर संदीप इस दूरस्थ गाँव में अपनी सेवाएं देने के लिए हैदराबाद से यहाँ आये हैं। उनका कहना है कि रोजाना वे औसतन 50 से 60 लोगों का इलाज करते हैं। डॉक्टर संदीप ने कहा कि ऐसे इलाके में कार्य करने से उन्हें अत्यधिक संतोष मिलता है।जहाँ उनकी सेवाओं की सबसे अधिक आवश्यकता है।

इसके अतिरिक्त साप्ताहिक ग्रामीण हाट में महिलाओं और बच्चों को नियमित स्वास्थ्य जाँच और टीकाकरण तथा खून की जांच की सुविधा के साथ अस्थाई स्वास्थ्य बूथ लगाये गये हैं, जहाँ बड़ी संख्या में ग्रामीण सामान खरीदने बेचने आते हैं। अधिकतर महिलाएं और बच्चे ऐसे गांवों से इन हाटों में आते हैं जहाँ स्वास्थ्य कर्मी पहुँच नहीं पाते हैं इसलिए वे यहां इन सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं। इस पहल की शुरूआत से अब तक साप्ताहिक हाटों में 70 स्वास्थ्य बूथ लगाए जा चुके हैं और इसके काफी सकारात्मक परिणाम मिले हैं। बीजापुर मॉडल दंतेवाड़ा और सुकमा जिले में भी दोहराया गया है

और छत्तीसगढ़ के अन्य इलाकों में भी ऐसी पहल करने की आवश्यकता है जहाँ दाई, स्त्री रोग, बाल रोग विशेषज्ञ, सर्जन और एनेस्थिशिया देने वालों के 80 पद खाली हैं।

हालांकि देश में मातृ और शिशु मृत्यु दर में कमी लाने में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। इसके बावजूद आज भी लगभग 44,000 महिलाओं की गर्भावस्था से संबंधित कारणों से और लगभग 6.6 लाख नवजात शिशुओं की पैदा होने के 28 दिन के भीतर ही मृत्यु हो जाती है। अगर प्रसवपूर्ण अवधि के दौरान गर्भवती महिलाओं की अच्छी देखभाल की जाए और गंभीर एनीमिया, गर्भावस्था के कारण उच्च रक्तचाप जैसी शिकायतों का समय पर पता लगाकर इलाज किया जाए तो इनमें से कई महिलाओं का जीवन बचाया जा सकता है।

इसके लिए पिछले वर्ष जून में प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान (पीएमएसएमए) शुरू किया गया था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रत्येक माह की 9 तारीख को सभी गर्भवती महिलाओं को नि:शुल्क व्यापक प्रसूती पूर्व देखभाल उपलब्ध कराना है। पीएमएसएमए के तहत महिलाओं को गर्भावस्था के दूसरे और तीसरे महीने में निर्धारित स्वास्थ्य सुविधाओं पर प्रसवपूर्ण देखभाल सेवा का न्यूनतम पैकेज दिया जाता है। निजी क्षेत्र के निर्धारित स्वास्थ्य सुविधाओं पर प्रसवपूर्व देखभाल सेवा का न्यूनतम पैकेज दिया जाता है। निजी क्षेत्र के ओबीजीवाई विशेषज्ञों, रेडियोलॉजिस्टों और चिकित्सकों को ऐसे सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं पर स्वैच्छिक रूप से अपनी सेवाएं देने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। जहाँ सरकारी क्षेत्र के चिकित्सक उपलब्ध नहीं या पर्याप्त नहीं हैं।

इस कार्यक्रम के तहत गर्भवती महिलाओं के लिए नि:शुल्क जांच में रक्तचाप, शर्करा स्तर, एचआईवी, सिफिलीस, वजन, हिमोग्लोबिन की जांच शामिल हैं। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी स्वास्थ्य सुविधाओं पर गर्भवती महिलाओं के लिए आईएफए और केल्शियम की खुराक जैसी दवाइयाँ उपलब्ध हैं।

इस नवीन योजना के अन्तर्गत गर्भवती महिलाओं को मातृ और शिशु सुरक्षा (एमसीपी) कार्ड तथा सुरक्षित मातृत्व पुस्तिका दी जाती है। इस अभियान का सबसे महत्वपूर्ण भाग उच्च खतरे वाली गर्भवती महिलाओं की पहचान कर उनका इलाज करना है। हर बार जांच करने पर एमसीपी कार्ड पर गर्भवती महीला की स्थिति और खतरे के बारे एक स्टीकर लगाया जाता है। उदाहरण के लिए हरे स्टीकर बगैर खतरे वाली महिलाओं के लिए और लाल स्टीकर उच्च जोखिम वाली गर्भवती महिलाओं के लिए होता है। ऐसा करने से डॉक्टर आसानी से स्वास्थ्य संबंधी शिकायत का पता लगा सकते हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पिछले साल 31 जुलाई के अपने मन की बात कार्यक्रम में डॉक्टरों से एक वर्ष में 12 दिन मातृ स्वास्थ्य को समर्पित करने का आग्रह किया था।

3750 से अधिक निजी क्षेत्र के डॉक्टरों ने इस कार्यक्रम के लिए स्वैच्छिक पंजीकरण करवाया है और वे देशभर की गर्भवती महिलाओं को निशुल्क सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। कार्यक्रम की प्रगति के बारे में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में मातृत्व स्वास्थ्य उपायुक्त डॉक्टर दिनेश बसवाल ने कहा कि देश के राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में 11,000 से अधिक सरकारी स्वास्थ्य केन्द्रों पर पीएमएसएमए सुविधाएँ प्रदान की जा रही है और अब तक 45 लाख से अधिक प्रसवपूर्व जाँच की गई है। उन्हों ने कहा कि 2.8 लाख से अधिक उच्च जोखिम वाली गर्भवती महिलाओं की पहचान की गई है।

भारतीय नवजात कार्य योजना (आईएनएपी)

सितम्बर 2014 में शुरू किये गये आईएएपी कार्यक्रम का उद्देश्य वैश्विक योजना से पाँच वर्ष पहले यानी 2030 तक नवजात मृत्यु दर को एक अंक में लाना है। इस कार्य योजना को नवजात मृत्यु रोकथाम, देखभाल में सुधार, जीवित रहने के आगे की देखभाल और अधिकतर नवजात शिशुओं की मृत्यु के लिए जिम्मेदार कारकों जैसे समय से पहले जन्में, अल्प विकसित या बीमार शिशुओं को प्राथमिकता देने पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। इस योजना के अन्तर्गत परिभाषित पहल के छह स्तंभ गर्भाधान पूर्व और जन्म पूर्व देखभाल, प्रसव और बच्चे के जन्म के दौरान देखभाल, तुरंत नवजात देखभाल, स्वस्थ नवजात की देखभाल, अल्प विकसित और बीमार नवजात की देखभाल तथा नवजात की जीवित रहने के आगे की देखभाल है। आईएनएपी को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के वर्तमान प्रजनन, मातृ, नवजात, बाल और किशोर स्वास्थ्य ढांचे में लागू किया जाएगा।

आशा है कि इन कार्यक्रमों से मातृ और शिशु मृत्यु दर कम कर वांछित स्तर तक लाने में मदद मिलेगी और इससे हमारी देश की महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा।

– सरिता बरारा

लेखिका नई दिल्ली में स्वतंत्र पत्रकार हैं और वे समाचार पत्रों में सामाजिक मुद्दों पर लिखती हैं। इस लेख में व्यक्त किये गये विचार लेखिका के स्वयं के हैं। **यह जानकारी पसूका कोलकाता ने दी।**

मजदूर वर्ग को राज्य सत्ता पर कब्जा करना होगा, जिस तरह रूस के मजदूरों ने सौ वर्ष पहले किया था!

हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट गदर पार्टी की केन्द्रीय समिति का आह्वान 3 नवम्बर 2017

(9, 10, 11 नवम्बर 2017 को दिल्ली में बाँटा गया– सं०)

मजदूर साथियो!

9 नवम्बर से संसद के सामने शुरू होने वाला तीन दिवसीय महा पड़ाव एक विशाल विरोध कार्यक्रम है। इसका आयोजक नेशनल कन्वेंशन ऑफ वर्कर्स (मजदूरों का राष्ट्रीय अधिवेशन) है, जिसमें अनेक अलग-अलग क्षेत्रों के मजदूरों की ट्रेड यूनियने और फेडरेशने शामिल हैं। इसमें इस्पात, कोयला, बिजली, पेट्रोलियम, मशीनरी व मशीन टूल, रक्षा क्षेत्र उत्पादन, रेलवे, बैंक, सड़क, वायु व जल परिवहन, टेलिकॉम और आई.टी उद्योंगों के मजदूर शामिल हैं। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम से पहले देश के हर राज्य जिले और ब्लाक में, हर औद्योगिक क्षेत्र में बड़े-बड़े सामूहिक अभियान आयोजित किए गये हैं।

मजदूर यूनियनों के मांग पत्र में निम्नलिखित मांगे शामिल हैं– सर्वव्यापक सार्वजनिक वितरण व्यवस्था की स्थापना की जाए, आवश्यक वस्तुओं के व्यापार में सट्टेबाजी पर रोक लगाई जाए, सभी श्रम कानूनों को सख्ती से लागू किया जाए, श्रम कानूनों का हनन करने वालों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाए, न्यूनतम वेतन को 18000 रुपये प्रति माह किया जाए और महंगाई के साथ-साथ उसे बढ़ाने का प्रावधान हो, निजीकरण पर रोक लगाई जाये, साल-भर के स्थाई काम को ठेके पर करवाने पर रोक लगाई जाए, ट्रेड यूनियनों का पंजीकरण अर्जी देने के 45 दिनों के अन्दर बाध्यकारी हो तथा रेलवे, बीमा और निजीकरण पर रोक लगाई जाए।

8 अगस्त को जारी किये गये अपने घोषणापत्र में नेशनल कन्वेंशन ऑफ वर्कर्स ने देश के विभिन्न भागों में संघर्ष कर रहे किसानों तथा जॉवांइंट नेशनल फोरम ऑफ पेजेन्ट्स आर्गेनाइजेशन्स (किसान संगठनों के संयुक्त राष्ट्रीय मंच) का पूरा-पूरा समर्थ किया। उसने देश भर के मेंहनतकशों को आह्वान किया कि केन्द्र सरकार की जन-विरोधी, राष्ट्र-विरोधी कार्यवाहियों के खिलाफ, जल्दी ही एक अनिश्चितकालीन आम हड़ताल की तैयारी करें।

हिन्दोस्तान की कम्युनिष्ट गदर पार्टी पूंजीपति वर्ग और उसकी सरकारों के खिलाफ मजदूर वर्ग की बढ़ती एकता और मजदूर-किसान एकता को सलाम करती है। आइये, इस तीन दिवसीय विरोध कार्यक्रम को सफल बनाने और इसे मजदूर वर्ग की ताकत का महाप्रदर्शन बनाएं!

मजदूर साथियों!

हमारे विरोध कार्यक्रमों की ताकत साल दर साल बढ़ती जा रही है। सितम्बर 2015 और सितम्बर 2016 की आम हड़तालों में करोड़ों मजदूरों ने भाग लिया। परन्तु हमारे इतने विशाल विरोध कार्यक्रमों के बावजूद केन्द्र सरकार की श्रम-विरोधी, किसान-विरोधी और राष्ट्र-विरोधी कार्यवाहियां अनवरत जारी हैं। मजदूर वर्ग के नेताओं के सामने आज यह गंभीर सवाल है, कि हिन्दोस्तान की दिशा को बदलने के लिए हमें क्या करना होगा?

पूंजीपति वर्ग और उसके सभी वक्ता यह दावा करते हैं कि केन्द्र सरकार को चलाने वाली पार्टी हिन्दोस्तान की दिशा को तय करती है। अगर सरकार मेहनतकश जनसमुदाय के हितों के खिलाफ काम करती है तो हमें कहा जाता है कि अगले लोकसभा चुनावों में सत्तासीन पार्टी के खिलाफ वोट दो। लेकिन हमारे जीवन का अनुभव यही दिखाता है कि सत्तासीन पार्टी के खिलाफ वोट देने से हिन्दोस्तान की दिशा में कोई बदलाव नहीं आता है।

2004 में जब वाजपेयी की अगुवाई में भाजपा-नीत सरकार चुनाव हार गयी, तो मनमोहन सिंह की अगुवाई में कांग्रेस-नीत सरकार सत्ता में आयी। उस समय यह दावा किया गया था कि भाजपा ने सिर्फ सबसे अमीर पूंजीपतियों के लिए 'इंडिया शाइनिंग' बनाया था, जबकि कांग्रेस पार्टी अमीर और गरीब, दोनों के हित में काम करेगी। परन्तु 2004 और 2014 के बीच में, सबसे अमीर 1 प्रतिशत और बाकी हिन्दोस्तानियों के बीच की खाई पहले से कहीं ज्यादा तेज गति से चौड़ी होती गई। इसके लिए भ्रष्ट कांग्रेस पार्टी को दोषी ठहराया गया और भाजपा को 'स्वच्छ' विकल्प बताकर खूब बढ़ावा दिया गया। आज यह भाजपा के शासन

को बर्दाश्त करना मुश्किल हो रहा है, तब कांग्रेस पार्टी को फिर से 'धर्म-निरपेक्ष' विकल्प बताकर बढ़ावा दिया जा रहा है।

कुछ कुछ समय के बाद एक पार्टी सत्ता में आकर दूसरी पार्टी की जगह ले लेती है, परन्तु मजदूरों और किसानों की हालतें बद से बदतर होती रहती है। पूंजीपतियों की जो भी सरकार आती हैं, वह पिछली सरकार से और भयानक तरीके से हमारी रोजी-रोटी और अधिकारों पर हमले करती है।

हिन्दोस्तान के कार्यक्रम और हिन्दोस्तान की दिशा को सत्तासीन पार्टी नहीं निर्धारित करती है। इन पार्टियों के पीछे एक वर्ग है। वह वर्ग है 150 इजारेदार पूंजीपतियों की अगुवाई में पूंजीपति वर्ग। वह वर्ग ही देश का एजेंडा तय करता है।

इजारेदार पूंजीपति अपने बेशुमार धनबल और राज्य मीडिया पर अपने नियंत्रण का इस्तेमाल करके, अपनी एक या दूसरी भरोसेमंद पार्टी को चुनावों में जिताते हैं। वे चुनावों का इस्तेमाल करके अपने आपसी अन्तर्विरोधों को हल करते हैं और अपने कार्यक्रम को वैधता दिलाने के लिए, उसे "जनादेश" बतौर पेश करते हैं।

हालांकि चुनावों के जरिए, कुछ-कुछ समय बाद एक पार्टी दूसरी पार्टी की जगह ले लेती है, परन्तु पूंजीपति वर्ग के शासन का राज्य नहीं बदलता है। राज्य की पूरी मशीनरी– अदालत, अफसरशाही, पुलिस और सुरक्षा बल– हमेशा पूंजीपति वर्ग की सेवा में ही काम करती है और मजदूरों व किसानों के प्रतिरोध को कुचलती है।

हम मजदूर वर्ग को संगठित करने वाले कार्यकर्ता हैं और अपने वर्ग को सच बताना हमारा फर्ज है। हमें मजदूरों को साफ-साफ कहना होगा कि यह उम्मीद करने से कोई फायदा नहीं है कि अगले चुनावों से हमारे हित में कोई तब्दीली होगी। हमें यह सच बताना होगा कि जब तक इजारेदार पूंजीवादी घरानों की अगुवाई में पूंजीपति वर्ग राज्य सत्ता पर नियंत्रण करता रहेगा और हम मेहनतकशों को आपस में बांटकर तथा हमारी जमीन और श्रम को लूटकर हमारे ऊपर शासन करता रहेगा, तब तक न तो भ्रष्टाचार की समस्या का हल होगी और न ही साम्प्रदायिकता की समस्या।

हमारा संघर्ष इस या उस खास पार्टी के खिलाफ नहीं है। हमारा संघर्ष सत्तासीन वर्ग के खिलाफ है। हमें उस वर्ग को सत्ता से हटाने और अपने हाथों में राज्य सत्ता लेने के लिए संगठित होना होगा। ऐसा करके ही हम हिन्दोस्तान की दिशा को बदल सकेंगे।

मजदूर साथियो!

इस वर्ष के 7 नवम्बर को रूस में महान अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति के सौ वर्ष पूरे हुए। उस समय के बाद सौ वर्ष बीत चुके, जब रूस के मजदूरों और सैनिकों ने सेंट पीटर्सबर्ग में विंटर पैलेस पर हल्ला बोला था और सरमायदारों की अस्थाई सरकार के प्रतिनिधियों को गिरफ्तार कर लिया था। रूस के मजदूर वर्ग ने अधिकतम किसानों के साथ गठबंधन बनाकर, अपने हाथों में राज्य सत्ता ले ली थी। मजदूर वर्ग सत्तासीन वर्ग बन गया था और उसने रूस की दिशा तथा दुनिया के इतिहास की सम्पूर्ण दिशा को बदल दिया था।

आज हिन्दोस्तान का मजदूर वर्ग 100 वर्ष पहले के रूसी मजदूर वर्ग की तुलना में बहुत बड़ा, ज्यादा शिक्षित तथा यूनियनों में संगठित है। हमें अपने देश का सत्तासीन वर्ग बनने के लिए क्या करना होगा?

हमें अपनी राजनीतिक चेतना और संगठन को खूब विकसित करना होगा। हमें ट्रेड यूनियन आन्दोलन को सरमायदारों की संसदीय राजनीति के प्रभाव से मुक्त कराना होगा। हमें वर्तमान संसदीय लोकतंत्र की व्यवस्था को बदलकर, उसकी जगह श्रमजीवी लोकतंत्र की नई व्यवस्था स्थापित करने के लक्ष्य के साथ संघर्ष करना होगा। श्रमजीवी लोकतंत्र वह व्यवस्था होगी जिसमें मेहनतकश बहुसंख्या की प्रधानता होगी, न कि शोषक अल्पसंख्यक की।

हमें उत्पादन और विनिमय के मुख्य साधनों पर इजारेदार पूंजीवादी घरानों की मालिकी और नियंत्रण को खत्म करने के लक्ष्य के साथ संघर्ष करना होगा। हमें अर्थव्यवस्था की नई दिशा दिलाने के लिए संघर्ष करना होगा, ताकि इंसानों की जरूरतें पूरी हों, न कि पूंजीपतियों की लालच।

हमारे एक महत्वपूर्ण काम मजदूर एकता समितियों का निर्माण करना तथा उन्हें मजबूत करना है। अर्थव्यवस्था के अनेक क्षेत्रों और अनेक औद्योगिक क्षेत्रों में मजदूर एकता समितियों की स्थापना हुई है। ये समितियाँ संसदीय पार्टियों की आपसी स्पर्धा के कारण पैदा किए बंटवारों को खत्म करने का काम कर रही है। ये समितियाँ लोगों की राजनीतिक एकता को मजबूत कर रही है तथा सभी मजदूरों के साझे संघर्ष को सामूहिक नेतृत्व देने का काम कर रही है। हमें इन समितियों को और विकसित करना होगा, इन्हें ऐसे संगठन बनाने होंगे जिनसे मजदूर सामूहिक तौर पर अपना कार्यक्रम निर्धारित करेंगे। हमें इन समितियों के जरिए मजदूर वर्ग को राज्य सत्ता पर कब्जा करने के लिए तैयार करना होगा।

मजदूर साथियो!

इजारेदार पूंजीवादी घराने हिन्दोस्तान को एक खतरनाक रास्ते पर धकेल रहे हैं। उन्होंने नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में भाजपा की बहुमत सरकार को बिठाया है। ताकि वे अपने मजदूर विरोधी, किसान विरोधी, समाज विरोधी और राष्ट्र विरोधी कार्यक्रम को तेज गति से लागू कर सकें। नोटबंदी और जीएसटी जैसे पैशाचिक कदम हिन्दोस्तान के इजारेदार पूंजीपतियों के एक प्रमुख वैश्विक खिलाड़ी बनने के आक्रमक प्रयासों के हिस्से हैं। हमारे देश के शासक इस संकीर्ण लक्ष्य को हासिल करने के लिए सांप्रदायिकता फैलाकर मजदूरों और किसानों को बांट रहे हैं तथा संघर्ष के रास्ते से भटका रहे हैं। वे दुनिया की सबसे खतरनाक ताकत, अमरीकी साम्राज्यवाद से दोस्ती बढ़ा रहे हैं। आज अमरीकी साम्राज्यवाद पूरे एशिया पर अपनी प्रधानता जमाने के लिए बड़े आक्रमक तरीके से आगे बढ़ रहा है। इन हालातों में हमारे शासक नाजायज और विनाशकारी साम्राज्यवादी युद्धों में हिन्दोस्तान के फंस जाने के खतरे को खूब बढ़ा रहे हैं।

इस तबाहकारी रास्ते से हिन्दोस्तन को बचाने का एक ही रास्ता है। इजारेदार पूंजीवादी घरानों की अगुवाई में शोषकों के राज को खत्म करना होगा। वह मजदूर वर्ग की अगुवाई वाली क्रांति थी, जिसने 100 वर्ष पहले रूस को प्रथम विश्व युद्ध के चंगुल से बाहर निकाला था और रूसी लोगों को सब तरफा प्रगति का रास्ता खोला था। हमारे देश की वर्तमान स्थिति वैसी ही क्रान्ति की मांग कर रही है।

मजदूर वर्ग की सभी पार्टियों और संगठनों को इस मुख्य सवाल पर ध्यान देना होगा कि हम अपने देश में अल्पसंख्यक शोषक पूंजीपति वर्ग के शासन को कैसे खत्म करेंगे और मजदूरों व किसानों का शासन कैसे स्थापित करेंगे। हमें किसी भी बहाने पर इस लक्ष्य से नहीं भटकना चाहिए।

आइए, इस गौरवपूर्ण लक्ष्य को हासिल करने के लिए पूरी ताकत के साथ आगे बढ़ें!

हिन्दोस्तान की धरती पर क्रान्ति की विजय की हालातें तैयार करने के लिए अपने काम को आगे बढ़ायें!

इंकलाब जिन्दाबाद!

हिन्दोस्तान की कम्युनिष्ट गदर पार्टी

ई-392 संजय कालोनी, ओखला फेस-2, नई दिल्ली- 110020
Ph. : 9810167911, e-mail : melpaper@yahoo.com
mazoorektalehar@gmail.com,

प्रथम विश्वयुद्ध 1914-1919 के दौरान शहीद हुए भारतीय सेना के दो सैनिकों का अन्तिम संस्कार समारोह फ्रांस में

20 सितम्बर, 2016 को पेरिस से लगभग 230 किमी की दूरी पर लेवेन्टी सैन्य कब्रिस्तान के निकट, रिचबोर्ग गांव की दक्षिण दिशा की ओर, उत्खन्न कार्य के दौरान दो मानव अवशेष पाए गए। उनके सामान की जाँच करने पर उनकी पहचान 39 वें रॉयल गढ़वाल रायफल्स के हताहतों के रूप में हुई। राष्ट्रमंडल युद्ध कब्र आयोग (सीडब्लयूडब्लयूजीसी) के कार्यालय ने फ्रांस सरकार और फ्रांस में भारतीय दूतावास से परामर्श करके, इन भारतीय सैनिकों का अन्तिम संस्कार समारोह, लेवेन्टी सैन्य कब्रिस्तान में पूरे सैनिक सम्मान के साथ करने का निर्णय लिया है। इस समारोह में भाग लेने के लिए भारतीय सेना की ओर से गढ़वाल रायफल्स रेजीमेन्टल केनद्र के कमाण्डेन्ट, गढ़वाल रायफल्स रेजीमेन्टल पापि बैन्ड के दो बेगपाइपर्स (मशकवादक) और फैस्टूबर्ट के युद्ध के बहादुर नायक स्वर्गीय नायक दरवान सिंह नेगी, विक्टोरिया क्रास के पौत्र कर्नल नीतिन नेगी को मनोनीत किया गया है। इसी क्रम में शहीद सैनिकों की कब्र की मिट्टी को उसकी गृह भूमि पर वापस लाया गया 12 नवम्बर को।

प्रथम/39वीं और द्वितीय/39वीं रॉयल गढ़वाल रायफल्स की गढवाल ब्रिगेड ने प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान फ्रांस और फ्लैंडर्स की उन खतरनाक खाइयों में अपूर्व शौर्य का प्रदर्शन किया था। ब्रिटिश और भारतीय सेना ने कंधे से कंधा मिलाकर यह लड़ाई लड़ी और अपना कर्तव्य निभाते हुए शहादत पाई। गढ़वाल ब्रिगेड ने फ्रांस और फ्लैन्डर्स थियेटर में 6 युद्ध सम्मान और दो विक्टोरिया क्रास प्राप्त किये।

इस पवित्र अवसर पर, भारतीय सेना प्रमुख, भारतीय सेना की ओर से ब्रिगेडियर इन्द्रजीत चटर्जी और गढ़वाल रायफल्स रेजीमेन्टल केन्द्र के कमाण्डेन्ट और सूबेदार मेजर त्रिलोक सिंह नेगी द्वारा भारतीय मेरठ डिवीजन के शहीदों को नुवे चैपेल युद्ध स्मारक पर पुस्पांजलि अर्पित की गयी।

–यह जानकारी पसूका, कोलकाता ने दी।

पृष्ठ 1 का शेषांश

तीन बरसेर फिरे.....

भगवाकरण हो गया है। विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता पर गंभीर हमले हुए हैं। पारम्परिक ज्ञान को वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर तवज्जो दी जा रही है और पौराणिक कथाओं को इतिहास बताया जा रहा है। यह भी अतीत का महिमामंडन करने के लिए केवल ब्राह्मणवादी प्रतीकों जैसे गीता, संस्कृत और कर्मकांड को बढ़ावा दिया जा रहा है।

दिखावटी देशभक्ति का बोलबाला हो गया है। पूर्व केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री ने यह प्रस्तावित किया था कि हर विश्वविद्यालय के प्रांगण में एक बहुत ऊँचा खंबा गाड़ कर उस पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाए। हर सिनेमा हॉल में फिल्म के प्रदर्शन के पहले राष्ट्रगान बजाया जाना अनिवार्य कर दिया गया है। एक अन्य स्वनियुक्त देशभक्त ने यह प्रस्तावित किया है कि हर विश्वविद्यालय में 'देशभक्ति की दीवार' हो जिस पर सभी 21 परमवीर चक्र विजेताओं के चित्र उकेरे जाएं। समाज के सभी वर्गों का देश की उन्नति में योगदान होता है परन्तु प्रचार ऐसा किया जा रहा है, मानो केवल सेना ही देश की सबसे बड़ी सेवा कर रही हो। जो किसान खेतों में काम कर रहे हैं और जो मजदूर कारखानों में खट रहे हैं, क्या उनकी सेवाओं का कोई महत्व ही नहीं है? लालबहादुर शास्त्री ने 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया था। यह सरकार केवल जय जवान का उद्घोष कर रही है और किसान को विस्मृत कर दिया गया है

देश में प्रजातंत्र सिकुड़ रहा है और बोलने की आज़ादी पर तीखे हमले हो रहे हैं। मीडिया का एक बड़ा तबका शासक दल के साथ हो लिया है और वह उन सब लोगों की आलोचना करता है, जो सरकार की नीतियों के विरोधी हैं। मीडिया में प्रजातंत्र के चौथे स्तम्भ और सरकार के प्रहरी होने की अपनी भूमिका को भुला दिया है। दाभोलकर,पंसारे और कलबुर्गा की हत्या के साथ देश में असहिष्णुता का जो वातावरण बनना शुरू हुआ था, वह और गहरा हुआ है। मुसलमानों के खिलाफ तो ज़हर उगला ही जा रहा है, दलित भी निशाने पर है।

आज देश में जिस तरह का माहौल बन गया है, उसे देखकर यह अहसास होता है कि केवल प्रचार के जरिए क्या कुछ हासिल नहीं किया जा सकता। लोगों के मन में यह भ्रम पैदा कर दिया गया है कि मोदी सरकार देश का न भूतो न भविष्यति विकास कर रही है और आम लोगों का भला हो रहा है।

परन्तु हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि देश के कई हिस्सों में लोगों ने अपने विरोध, असंतोष और आक्रोश का जबरदस्त प्रदर्शन भी किया है। किसानों के एकजुट हो जाने के कारण, मजबूर होकर, सरकार को अपना भूसुधार विधेयक वापस लेना पड़ा। कन्हैया कुमार, रामजस कॉलेज, रोहित वेमुला और ऊना के मुद्दों पर जिस तरह देश में वितृष्णा और आक्रोश की एक लहर दौड़ी, उससे यह साफ है कि सरकार की प्रतिगामी नीतियों को चुनौती देने वालों की संख्या कम नहीं है। जहाँ हिन्दुत्ववादी तत्वों का स्वर ऊँचा, और ऊँचा होता जा रहा है, वहीं देश भर में चल रहे कई अभियानों और आन्दोलनों से यह आशा जागती है कि भारतीय संविधान के मूल्यों पर आधारित बहुवादी समाज के निर्माण के स्वप्न को हमें तिलांजलि देने की आवश्यकता नहीं है।

–मूल लेखक राम पुनियानी
(हिन्दी रूपान्तरण अमरीश हरदेनिया)

सोच के इजाफे की पत्रिका मुश्किल हो रहा है इतनी प्रतियां छापना

यह पत्रिका विज्ञापनविहीन पत्रिका लग रही होगी। असल में हमें विज्ञापन मिलते ही नहीं। इसका कारण है हमारी कोई विज्ञापननीति नहीं। कुछ विज्ञापन आ भी जाते हैं। हम जब भी विज्ञापन की परख/सत्यता की बात करते हैं, हमें विज्ञापन नहीं मिलते। दिक्कत ये आ रही है कि सदस्यों को नियमित भेजते समय जितनी कापियाँ भेजनी पड़ रही है उतने की पूंजी में दिक्कत आ रही है अतएव हम अपनी हालत सुधार के लिए अगले एक वर्ष तक नई सदस्यता बंद कर रहे हैं। पुराने लोगों का नवीनीकरण कराया जा सकता है। सदस्य संख्या लिख दें।

क्षमायाचना सहित!

मीनाक्षी सांगानेरिया
वितरण विभाग

इतना याद आयेगा अन्दाजा न था

सदीनामा के 1 से 30 अक्टूबर 2017 और सन्मार्ग के रविवारीय अंक (8 अक्टूबर) में डॉ० प्रेम शंकर त्रिपाठी जी द्वारा मदन सूदनजी के 81 वे जन्मदिन पर लिखा विशेष आलेख पढ़ा, बेहद अच्छा लगा। मदन जी के बारे में कई बातों की जानकारी तो थी, कुछ नई जानकारियाँ भी मिलीं। मदन जी सचमुच यारों के यार थे और वे जिस अड्डे में रहते उनके चारों ओर आनन्द का एक वलय-सा बन जाता था और उनकी बेलौस हँसी वातावरण में तारी हो जाती। इस आलेख को पढ़ते हए मुझे भी उनके साथ बिताए हुए पल याद आ गए। जब मैं रानीगंज या फिर बाद में पुरुलिया प्रवास के दौरान आकाशवाणी कोलकाता आया करता था अपनी कविताएं रिकॉर्ड करवाने। वहाँ अधिकतर तो मदन सूदन जी ही रिकॉर्ड करते या फिर कभी प्रीतम खन्ना। उनलोगों से ही मैंने रिकॉर्डिंग करवाने का ककहरा सीखा था। मदन सूदन जी सचमुच बड़े मजाकिया थे और उर्दू हिन्दी दोनों पर उनका लगभग समान अधिकार था। अपने पुरुलिया-प्रवास के दौरान कुछ वर्षों तक मैं अपनी कविता रिकार्ड करवाने के लिए आकाशवाणी नहीं आ सका था। और फिर एक बार कलकत्ता आना हुआ भारतीय भाषा परिषद पहल सम्मान 2004 कार्यक्रम के लिए, जिसमें यह सम्मान आलोक धन्वा जी को दिया जाना था और यह तारीख थी 26 फरवरी 2005। मैं जैसे ही परिषद् के सभागार में पहुँचा और एक सीट पर बैठने ही वाला था कि एक गम्भीर-सी आवाज कानों में टकराई– ओ पुष्पजी, बड़े दिनों बाद कलकत्ता याद आ गया! नजर दौड़ाई तो देखा कि मदन सूदन जी एक किनारे अपने घुघराले बालों में खड़े मुस्करा रहे थे। मैं तुरंहत ही उनसे मिलने पहुँचा, तो तपाक से "गलवक्कड़ी" डालकर मिले और फिर उनकी एक जोरदार हंसी सभागार में तैर गई। सभी की नजरे उधर घूम गई थी। उनके साथ यही मेरी अन्तिम मुलाकात थी।

उसके बाद तो फिर अखबारों में पढ़ने को मिला कि 28 अगस्त 2005 को वे हमें छोड़ कर चले गये और अब वो हंसी यारों की महफिल में दोबारा ना मिलेगी।

डॉ० प्रेमशंकर जी ने बिल्कुल सही कहा है कि आज दुर्लभ हो गई है, मित्रों के बीच वैसी निष्कपट बातचीत, निश्चल छेड़छाड़ और उन्मुक्त हंसी। उनकी स्मृति तो, जो उन्हें जानते हैं निसंदेह कभी विस्मृत न होगी। किसी कवि की पंक्तियाँ हैं–

उनसे दूर जाने का इरादा तो न था
सदा साथ रहने का भी वादा तो न था
वो याद आएगा, ये तो जानते थे हम
पर इतना याद आएगा, ये अन्दाजा न था।

–रावेल पुष्प
नेताजी टावर
278/ए, एन.एस.सी बोस रोड
कोलकाता-47
E-mail : rawelpushp@gmail.com
चलन्तभाष : 9434198898

हमारी बेबसाइट

www.sadinama.in

इस अंक को इंटरनेट पर पढ़ें

ISSN : 2454-2121
R.N.I. No. WBHIN/2000/1974
Central Govt. Postal Regn. No. TECH/WB/RNP/SP-003/2014-16

1 से 31 दिसम्बर, 2017
कुल पेज : 20

मूल्य : 5.00
सदीनामा
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

परिवार के किसी भी सदस्य की
आस्वाभाविक हरकत को गंभीरता से लें
अच्छे मानसिक स्वास्थ्य या कोई भी बुरी आदत छुड़ाने के लिए
सदीनामा ने की है पहल
(अपनी सदस्यता संख्या बताते हुए सम्पर्क करें)

Mobile	e-mail	सदस्यता के लिए
9051525679	sadinama2000@gmail.com	9231845289

With best compliments from :

GOLDEN
Machinex Corporation

Regd. Office : 194/3, G.T. Road (North) Salkia
Howrah-711 106, West Bengal
Ph : 2655-7582, 2655-7835
Fax : (91) (033) 2655-7835/2211-5035

Showroom : 7, Ganesh Chandra Avenue
Kolkata- 700013
Ph. : 2237-2835, 2237-8896

Website : www. goldenmachinery.com

E-mail : mail@goldenmachinery.com

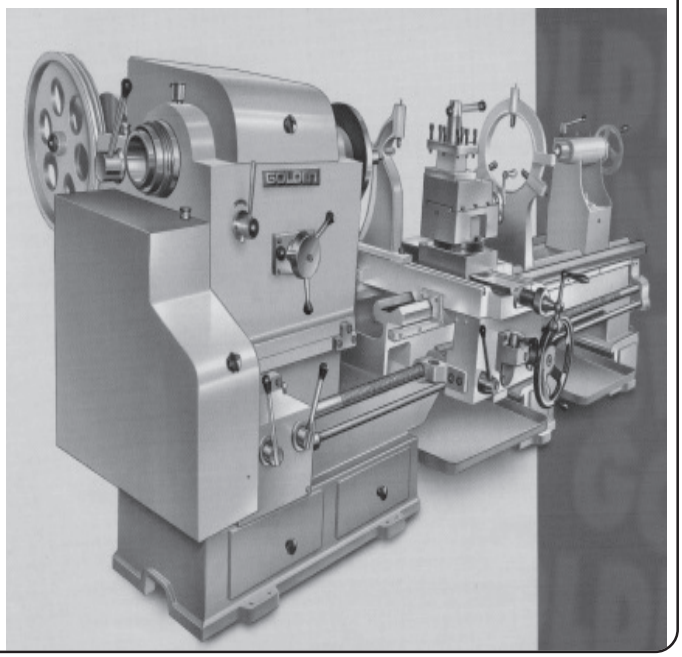

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी सोनिया शर्मा द्वारा डायमंड आर्ट प्रेस, 37 ए, बैंटिक स्ट्रीट, कोलकाता-69 से मुद्रित तथा H-5, Govt. Qtrs. Budge Budge (बजबज), Kolkata-700137, 24 Pgs. (S), W.B. India से प्रकाशित ।
संपादक : जितेन्द्र जितांशु, ☎: 9231845289, E-mail : jjitanshu@yahoo.com, R.N.I. No. WBHIN/2000/1974